साहित्य–संगीत–कला को समर्पित

शब्दम्

चरण २: २००५-०६

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००४ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं एवम् संगीत को प्रोत्साहित करना।

३. राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण २ : २००५-०६

नियामक मंडल

अध्यक्ष

किरण बजाज

उपाध्यक्ष

नन्दलाल पाठक

उदयप्रताप सिंह

सोम ठाकुर

सचिव

डॉ. सुबोध दुबे

विशिष्ट सलाहकार

शेखर बजाज

बालकृष्ण गुप्त

कैलाश गौतम

स्थानीय सलाहकार

डॉ. धुर्वेन्द्र भदौरिया

डॉ. महेश आलोक

डॉ. शशिकांत पाण्डेय

मंजर उल वासे

संपादन-प्रकाशन

मुकुल उपाध्याय

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित
शब्दम्

अनुक्रम

अध्यक्षीय निवेदन ॥३॥

हिंदी नवगीत ॥५॥
''बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु''

हिंदी दोहा ॥९॥
''दोहा संयोग का एक क्षण''

हिंदी ग़ज़ल ॥१३॥
''हो गई है पीर पर्वत सी''

समकालीन कविता ॥१६॥
''हर युग देता है कविता को नया अर्थ''

लोक भाषा एवं साहित्य ॥१९॥
''मस्जिद में पुजारी हो तो मंदिर में नमाज़ी''

हिंदी नाटक ॥२२॥
•'चरनदास चोर' न्यूज़ीलैंड में • 'विडंबना' जीवन की

संगीत - कला ॥२६॥
• शास्त्रीय गायन • सात्विक वीणा वादन • मोहिनी अट्टम् नृत्य

ज्वलंत समस्या और समाधान ॥२९॥
•'गंगा उदास है' • पत्रकार केवल माध्यम का कार्य करें

विविधा ॥३३॥
•'आप हंसते हैं पर मेरा ख्याल है' • 'अब ज्यादा जरूरत है बुद्ध की'
• स्वर संध्या एवम् वसंत पर्व • पुस्तक समीक्षा • प्रतिक्रियाएं

हिंदी प्रसार ॥४०॥
• शब्दम् वाचनालय • शब्दम् प्रकोष्ठ

शब्दम् द्वितीय स्थापना दिवस समारोह ॥४२॥
•'एक अनजान औरत का ख़त' • 'हिन्दी कहानी' • 'रंग त्रिवेणी'

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित
शब्दम्

अध्यक्षीय निवेदन

हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा ही शब्दम् का मिशन है . वैज्ञानिक विकास और तकनीकी प्रगति ने मनुष्य को व्यस्त ही नहीं, कुछ अंशों तक त्रस्त भी कर रखा है. ऐसी स्थिति में साहित्य से ही उसका आन्तरिक हित सम्भव है. शास्त्र कहते हैं - ''काव्य और शास्त्र का आनन्द लेते हुए ही बुद्धिमान लोगों का समय बीतता है.'' मनुष्य को और अच्छा मनुष्य बनाना ही साहित्य का उद्देश्य है. इस दिशा में शब्दम् के प्रयासों को जो प्रोत्साहन मिला है, उसके लिए हम आप सबके आभारी हैं. हमें पूरी आशा है कि आगे भी आपका सक्रिय सहयोग संस्था को प्राणदान देता रहेगा, जिससे बहुमुखी विकास की सम्भावनाओं के द्वार खुलेंगे. शब्दम् की गतिविधियों की भेंट लेकर मैं फिर एक बार आपके सामने उपस्थित हूँ . गत वर्ष की हमारी साहित्यिक सक्रियता उल्लेखनीय रही . हमारे कई कार्यक्रम अपनी गुणवत्ता के बल पर विख्यात हुए. हमारी सफलता के पीछे जनसाधारण का सहयोग और साहित्य की राष्ट्रीय विभूतियों का आशीर्वाद तथा मार्गदर्शन काम करता रहा. सर्वश्री नामवर

'शब्दम्' की प्रथम वर्षगाँठ पर प्रकाशित स्मारिका का विमोचन करते डॉ. माहेश्वर तिवारी एवं किरण बजाज. साथ में सुधांशु उपाध्याय

सिंह, केदारनाथ सिंह, माहेश्वर तिवारी, बुद्धिनाथ मिश्र, कैलाश गौतम, यश मालवीय, जगत प्रकाश चतुर्वेदी आदि की हमारे कार्यक्रमों में सक्रिय भागेदारी शब्दम् का सबसे बड़ा सौभाग्य थी . उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान को धन्यवाद देना उससे उऋण होने का प्रयास है, जो हमारे लिए सम्भव नही है. साथ ही मैं आभारी हूँ हिदुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद तथा केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा का जो हमारे कार्यक्रमों में निष्ठा से जुड़े हैं.

नन्दलाल पाठक, उदय प्रताप सिंह, सोम ठाकुर, मुकुल उपाध्याय जैसों ने तो शब्दम् परिवार का अपनी छत्रछाया से पालन पोषण किया है और आज भी कर रहे हैं.

शिकोहाबाद और हिन्द लैम्प्स के लोगों का अपनत्व संस्था का सबसे बड़ा बल रहा है . इस अवसर पर फिरोजाबाद एवं मैनपुरी जनपद के समर्पित हिन्दी प्रेमियों के प्रति, जिनमें कवि, लेखक, अध्यापक, प्राध्यापक, प्राचार्य तथा अन्य सम्मिलित हैं जिनके केन्द्र हैं डॉ. सुबोध दुबे, मैं अपनी कृतज्ञता प्रगट करती हूँ.

मैं अपने पत्रकार बन्धुओं तथा संचार माध्यम से जुड़े अन्य महानुभावों के प्रति अपना आभार प्रगट करती हूँ जिनके सामयिक प्रकाशन से शब्दम् की गतिविधियाँ जन-जन तक पहुँच सकी.

मैं 'स्पिक मैके' के प्रति भी अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सौजन्य से शास्त्रीय गायन, वादन, नृत्य के विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन सम्भव हो रहा है.

'शब्दम्' के इस अंक के अन्त में द्वितीय स्थापना दिवस के आयोजन सम्मिलित हैं. स्थापना दिवस को हमने हिन्दी भारतीय और अन्तर्राष्ट्रीय कहानी की रचना पाठ, गोष्ठी और मंचन को समर्पित किया है. इसकी पूरी रपट आप वार्षिकी के अन्त में देखेंगे.

विनीत

किरण बजाज

किरण बजाज

नागफ़नी से

नागफ़नी से घिरे
गुलाबों का क्या करें!
हम अपने आदमकद
ख़्वाबों का क्या करें!
सारे छज्जे, छत
पथराव में
जीते हैं घृणा के अलाव में
हम घर की जलती
मेहराबों का क्या करें !
चीलों ने डैनों से
आसमान घेरा
दुबका है गौरैये-सा
नया सबेरा
गोली की हद में
सुर्ख़ाबों का क्या करें !

- माहेश्वर तिवारी

हिंदी नवगीत

''बाँधो न नाव इस ठाँव बन्धु''

- **विषयः** हिन्दी नवगीत में समकालीन यथार्थ की अभिव्यक्ति (विचार संगोष्ठी एवं काव्यात्मक प्रस्तुति)
- **दिनांकः** १७ नवम्बर २००५ • स्थानः शब्दम् वाचनालय (हिन्द परिसर)
- **प्रायोजकः** उ.प्र. हिन्दी संस्थान एवं शब्दम्
- **आमंत्रित रचनाकारः**माहेश्वर तिवारी, सोम ठाकुर, सुधांशु उपाध्याय, यश मालवीय, विनोद श्रीवास्तव, डॉ. सुरेश

प्रथम सत्र में आयोजित विचार संगोष्ठी में आमंत्रित रचनाकारों ने 'हिन्दी नवगीत में समकालीन यथार्थ की अभिव्यक्ति' पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि - 'हर संवेदनशील रचनाकार अपने समय के यथार्थ से टकराता है और अपनी रचनाओं में उन्हें अभिव्यक्त करता है.' हिन्दी नवगीत की परम्परा के

यश मालवीय ''अँगुली –अँगुली छुवन अगहनी'' कविता प्रस्तुत करते हुए.

प्रथम पुरुष निराला ने जीवन को समग्रता से देखा और अपनी रचनाओं में अपने समय के अन्तरंग और बाह्य यथार्थ को अभिव्यक्ति दी. वहीं से अपनी रचनात्मकता की प्रेरणा लेते हुए बाद के नवगीत कवियों ने अपनी रचनाओं में अपने समय के यथार्थ को पिरो कर व्यक्त किया.

इस नवगीत गोष्ठी में विषय प्रवर्तन करते हुए माहेश्वर तिवारी ने समकालीन नवगीतकारों की रचनाओं से उद्धरण देते हुए कहा कि ''यथार्थ का केवल इकहरापन ही नहीं बल्कि उसके प्रत्येक आयाम को समकालीन नवगीतकारों ने अभिव्यक्ति दी है. इसे निराला से लेकर यश मालवीय की पीढ़ी तक रचनाकारों में सरलता से देखा-परखा जा सकता है.'' उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक, सामाजिक तथा राजनीतिक यथार्थ को रचनाकारों ने अपनी रचना में पिरोया है.

चर्चा में भाग लेते हुए सुधांशु उपाध्याय ने अपने विस्तृत आलेख में विभिन्न कोणों से नवगीत के यथार्थ की विवेचना की. उन्होंने कहा कि यथार्थ, रचनाकार की जरूरत है और रचनात्मक दवाब भी. आज इस गोष्ठी में उपस्थित नवगीत रचनाकारों ने अपने दायित्व का निर्वहन बखूबी किया है.

गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए सोम ठाकुर ने कहा कि ''यथार्थ केवल एकपक्षीय नहीं होता, बल्कि बहुमुखी होता है. वह आर्थिक, सामाजिक, मानसिक भी हो सकता है. इस सन्दर्भ में नवगीत सभी कोणों को भरने का प्रयत्न करता है, उसका संवेदन संसार अत्यन्त विस्तृत है, जिसमें रचनाकार की आत्मपरक अनुभूतियों के अलावा उतनी ही ऊर्जा के साथ वस्तुपरक सरोकारों के प्रति भी पूरी प्रतिबद्धता है''

श्रीमती किरण बजाज ने उद्‌गार प्रगट करते हुए नवगीतों की प्रस्तुति पर हर्ष व्यक्त किया. साथ ही

उन्होंने उपस्थित रचनाकार एवम् श्रोताओं का आभार व्यक्त किया. उन्होंने श्रेष्ठ साहित्य की आवश्यकता पर बड़े सरल ढंग से टिप्पणियाँ कीं.

द्वितीय सत्र की काव्यात्मक प्रस्तुति सरस नवगीतकार यश मालवीय व्दारा निराला जी की सुप्रसिद्ध सरस्वती वन्दना ''... वर दे वीणा वादिनी, वर दे..'' से प्रारम्भ हुई .

विनोद श्रीवास्तव ने अपने कई गीत प्रस्तुत करते हुए श्रोताओं पर गहरा प्रभाव छोड़ा. यथा- ''...नदी के तीर से गुजरे, नदी के बीच से गुजरे. कहीं भी तो लहर की बानगी हमको नहीं मिलती...'' तथा ''....बादलों ने तो कहा आओ चलें घर छोड़कर, चाहकर भी हम निकल पाये न पिंजरे तोड़कर....''

रचना ने श्रोताओं को गहराई तक प्रभावित किया .

सुधांशु उपाध्याय ने सहज भाषा में नये बिम्बों का प्रयोग करते हुए कहा ''...घर में इतनी चीजें हैं, चीजों में घर कहाँ गया, चिड़िया चलती है पैरों से, पर कहाँ गया...'' आज की विसंगतियों और आम आदमी की त्रासदी को रेखांकित किया. इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए लखनऊ से आये डा० सुरेश ने अपना चर्चित गीत ''बंजारे'' प्रस्तुत कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया.

काव्य समारोह का संचालन कर रहे हिन्दी के युवा कवि यश मालवीय ने अपनी ''पिता'' शीर्षक रचना प्रस्तुत कर लोगों के संवेदनाओं में एक नयी लहर पैदा कर दी. इसके अतिरिक्त उन्होंने कई

नवगीत काव्य समारोह में उपस्थित विनोद श्रीवास्तव, सुधांशु उपाध्याय, डॉ. सुबोध दुबे, श्रीमती किरण बजाज, यश मालवीय, डॉ. सुरेश

अन्य रचनायें भी प्रस्तुत कीं. काव्य समारोह को आगे बढ़ाते हुए डा० माहेश्वर तिवारी ने अपनी रचना पाठ का आरम्भ ''....घर में जूठे बासन बोले, सुबह हो गई है.... फूलों ने दरवाजे खोले, सुबह हो गई है.....'' से किया. इसके अतिरिक्त उन्होंने कई भावस्थितियों के अन्य गीत भी प्रस्तुत किये। यथा ''....एक तुम्हारा होना क्या से क्या कर देता है, खाली छतऔ; दीवारों को घर कर देता है....''.

शब्दम् की परिकल्पना से जुड़ी और उसकी प्रेरणास्रोत श्रीमती किरण बजाज ने जल को केन्द्र में रख कर एक महत्वपूर्ण रचना ''पानी की कहानी'' प्रस्तुत करते हुए कहा - ''.....जब न होगा पानी, क्या होगी कहानी, न खेत न खलिहानी, न गंगा महारानी...'' जिसने छन्द मुक्त होते हुए भी श्रोताओं को गीतात्मकता का सुख दिया. काव्य समारोह के अन्त में अध्यक्षता कर रहे सोम ठाकुर ने अपनी रचना ''...आ गये किस द्वीप में हम, देह पत्थर हो गयी, सर्प गंधा एक डाकिन साथ में फिरने लगी....'' तथा ''...छोड़कर फिर बोलती खामोशियों का हाशिया, दृष्टि से तुमने मुझे बौना किया .....'' एवं ''....बिखरे पीले चावल कल के, कमरों में खालीपन आज...'' प्रस्तुत की.

मध्य रात्रि तक चले इस काव्य समारोह में रचनाओं और उनकी प्रस्तुति ने श्रोताओं को बांधे रखा और उनकी प्रतिक्रिया थी कि किसी काव्योत्सव में एक साथ इतनी स्तरीय रचनायें सुनने का अवसर लम्बे अन्तराल के बाद मिला है.

नवगीतः निराला से यश मालवीय तक

बाँधो न नाव इस ठाँव,
बन्धु .
पूछेगा सारा गाँव, बन्धु.

यह घाट वही जिस पर हँस कर
वह कभी नहाती थी धँस कर
आँखें रह जाती थीं फँस कर
काँपते थे दोनों पाँव, बन्धु.

-निराला

अँगुली-अँगुली छुवन अगहनी।
कुहरे पर गोटा किरनों का ,
शीत चिरैया बैना बोहनी॥

हे ना सजा, सजा है आँगन।
लेपन पर सिन्दूरी थिरकन।
मलिन धूप का उबटन तनपर।
मुस्काती है उषा दुलहिनी॥

कढ़े हुए रूमाल सरीखा।
अभी-अभी सूरज था दीखा।
नीम शाल ओढ़े बादल का।
दाँत बजाती टहनी-टहनी।

धुआँ-धुआँ केतली साँस की।
चाय सखी हो गयी प्यास की।

मेरे उन अधरों ने छेड़ी
सिरहाने ही सबद रमैनी।

-यश मालवीय

नदी

फिर नदी अचानक सिहर उठी
यह कौन छू गया साँझ ढले।
संयम से बहते ही रहना
जिसके स्वभाव में शामिल था
दिन रात कटानों के घर में
ढहना ही उसका प्रतिफल था।
वह नदी अचानक लहर उठी
यह कौन छू गया साँझ ढले।

छू लिया किसी सुधि के क्षण ने
या छंदभरी पुरवाई ने
या फिर गहराते सावन ने
या गंधमई अमराई ने
सोते पानी में भंवर उठी
यह कौन छू गया साँझ ढले.

मुक्तक

धर्म छोटे-बड़े नहीं होते
जानते तो लड़े नहीं होते
चोट तो फूल से भी लगती है
सिर्फ पत्थर कड़े नहीं होते.

-विनोद श्रीवास्तव

आ गए किस द्वीप में हम

आ गए किस द्वीप में हम,
देह पत्थर हो गई.
सर्पगंधा एक डाकिन
साथ में फिरने लगी.
नाम लिख आए जहाँ हम
गुनगुनाती खुशबुओं से,
ढह गए वे बुर्ज,
कुछ टूटे कँगूरे रह गए.
बढ़ गए हैं पाँव
पीछे को बुलाती सीढ़ियों पर,
हो गए पूरे कथानक
हम अधूरे रह गए,
प्रश्न-वृक्षों की उठी शाखें हुई नंगी,
कि गुमसुम पर्वतों पर
बर्फ की ताज़ा रुई गिरने लगी.
पड़ गए जल में रवे,
लहरें थमी हैं,
घूमकर लौटी नहीं
वे चुंबनों की ली हुई जिंदा हवाएँ,
शिला खिसका कर मुहाने से
बुलाने लग गई है
वक्ष तक जल से भरी
अंध गुफाएँ.

- सोम ठाकुर

> नवगीत स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद के तीन दशकों में विकसित वह नवीन काव्य धारा है जो एक ओर तो पारम्परिक गीत-धारा से नितान्त भिन्न है, दूसरी ओर समसामयिक नयी कविता से, कथ्य और शिल्प दोनों स्तरों पर, पूरी तरह अलग हटी हुई है. मात्र गीत कहने से उसकी पहचान खो जाती है और नयी कविता कहने से उसकी अस्मिता ही लुप्त हो जाती है अतः नवगीत ही उसका एकमात्र सार्थक नाम है .
>
> -शम्भूनाथ सिंह
> ('नवगीत दशक' की भूमिका से)

हिन्दी दोहा

''दोहा-संयोग का एक क्षण''

- **विषयः** हिन्दी दोहा-प्रादुर्भाव, वर्तमान एवं सम्भावनायें
  कार्यशाला एवं दोहा सम्मेलन.
- **दिनांकः** २२ फरवरी, २००६ • **स्थानः** शब्दम् वाचनालय - हिन्द परिसर - उ.प्र.
- **प्रायोजकः** उ.प्र. हिन्दी संस्थान एवं शब्दम्
- **आमंत्रित दोहाकारः** सोम ठाकुर, कैलाश गौतम, जगत प्रकाश चतुर्वेदी, हरिराम द्विवेदी, डॉ. चन्द्रवीर जैन, सूर्य कुमार पाण्डेय, अशोक अंजुम एवं बालकृष्ण गुप्त.

''कोई भी विधा तब तक स्वीकार नहीं की जाएगी, जब तक उसमें तरलता न हो. दोहे की भाषा खड़ी बोली बेशक हो, लेकिन उसमें खुरदरापन न हो, विचार भी तरलता लिए हों तो बात हृदय के अन्दर तक पहुंचेगी'' ये विचार उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष सोम ठाकुर ने : ''हिन्दी दोहा : प्रादुर्भाव, वर्तमान एवं सम्भावनाएं'' विषय पर सम्पन्न हुई कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किये.

प्रथम सत्र में सोम ठाकुर ने कहा कि खड़ी बोली में लिखे गए दोहों को लोकमंच की शैलियों ने बरकरार रखा है . इसमें पहले बात कह दी जाती है फिर उदाहरण देते हैं. उन्होंने भारत और पाक के रिश्ते के सम्बन्ध में एक दोहा सुनाकर उदाहरण प्रस्तुत किया . ''....तू पत्थर की ऐंठ है, मैं पानी की लोच, तेरी अपनी सोच है मेरी अपनी सोच...''

कैलाश गौतम ने कहा, बड़े कथानक को एक दोहे के रूप में प्रस्तुत कर देना बड़ी बात है. यह दो पंक्तियों का छंद है. संयोग के क्षण को दोहा कहा गया है. संयोग का दोहे से लगाव है.

कवि जगतप्रकाश चतुर्वेदी ने कहा कि भाषाओं का आदिम छंद है दोहा. उन्होंने कहा कि कालिदास में भी ये मिलता है. विक्रम और उर्वशी के मध्य का जो कथानक है उसमें भी दोहे हैं. चतुर्वेदी ने कहा कि आज कबीर के दोहों जैसे दोहों की आवश्यकता है. इससे समाज में आत्मीयता आएगी. उन्होंने कहा इसका भविष्य उज्जवल है. यह फिर से स्थापित हुआ है. जिस दृढ़ता से मजबूत हुआ था, उतना ही सशक्त माध्यम है. तुलसीदास ने रामचरितमानस में दोहे का प्रचुरता से प्रयोग किया है.

कवि हरिराम द्विवेदी ने कहा कि दोहों में पूरी कथा समा जाती है. उन्होंने कहा कि आगे की पीढ़ी के लिए दोहा धरोहर के रूप में हमेशा रहेगा. डॉ. चन्द्रवीर जैन ने कहा कि दोहे के २३ भेद बताए गए हैं. इसको लेकर प्रयोग हर युग में होते रहे हैं.

कैलाश गौतम का तिलकाभिषेक, साथ में हैं किरण बजाज

हिन्दी दोहा

विचार गोष्ठी में मंचासीन (बायें से) सूर्यकुमार पाण्डेय, हरिराम द्विवेदी, पी. के. मिश्र (निदेशक, उ. प्र. हिन्दी संस्थान), सोम ठाकुर, किरण बजाज, जगत प्रकाश चतुर्वेदी एवं कैलाश गौतम

दूसरे सत्र में दोहे की संक्षिप्तता, गेयता और स्मरणीयता जैसी खूबियों को रेखांकित करने के उद्देश्य से दोहाप्रधान कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया. जिसमें हिन्दी के कई शीर्षस्थ कवियों ने इस दौर की विसंगतियों का खाका खींचा. राजनीति और भ्रष्टाचार को बेनकाब करने का प्रयास किया तो फागुन की सतरंगी छटा भी बिखेरी.

'शब्दम्' की अध्यक्ष किरण बजाज के अतिथि सत्कार एवं हरिराम द्विवेदी की संस्कृतनिष्ठ सरस्वती - वंदना के बाद युवा पीढ़ी के गंभीर कवि अशोक अंजुम ने राजनीति पर इस तरह व्यंग्य कसा-

''ना जाने किस जन्म का, भोग रही है भोग
कुर्सी तेरे भाग्य में दो कौड़ी के लोग''

अपनी गज़ल ''...तौबा-तौबा राम दुहाई अच्छा नहीं हुआ, तुमने छत पर ली अंगड़ाई अच्छा नहीं हुआ'' के द्वारा अशोक ने फागुनी माहौल की वाहवाही लूटी. हास्य व्यंग्य के जाने-माने कवि सूर्य कुमार पाण्डेय ने कहा - ''....नेता, वक्ता, रोंगटे और गधे के कान, खड़े हुए होते तभी, होती है पहिचान...'' ''राजनीति से अलविदा होते मूल्य तमाम, निर्वसनों के मुल्क में धोबी का क्या काम..'' हास्य माला के इन दोहा-मुक्तकों ने जहाँ ठहाके लगाने को विवश किया, वहीं सोचने के लिए भी श्रोताओं को मजबूर कर दिया.

साहित्य भूषण की उपाधि युक्त हरिराम द्विवेदी ने अध्यात्म रचनापाठ करते हुए कहा-

''सुख के साथी हैं बहुत, दुख का साथी कौन
जिसकी ओर निहारता, वही दीखता मौन''

वरिष्ठ साहित्यकार जगत प्रकाश चतुर्वेदी ने निजी अनुभवों की पीड़ा को यूं उद्गार दिया - ''...महानगर में वास है पर मन में वनवास, बाहर-बाहर जगत है भीतर छिपा प्रकाश...'' कार्यक्रम का संचालन कर रहे सुप्रसिद्ध कवि कैलाश गौतम ने अपने दोहों से विविध रंग बिखेरे, ''....गोरी धूप कछार की, हम सरसों के फूल, जब-जब होंगे सामने, तब-तब होगी भूल...'' ''...अच्छा है संसार में किस्मत का ये खेल, कातिल को कुर्सी मिले, फरियादी को जेल...'' ''...सब कुछ उल्टा हो गया आज कार्य-व्यापार, थाने में जन्माष्टमी, आश्रम में हथियार...'' ''...सुनता हूँ जिस दिन मिला, तीन लाख अनुदान. नयी जीप में बैठ कर लौटे हैं परधान...'' अलग-अलग सामाजिक स्थितियों को चित्रित करते इन दोहों के बीच लोग देर तक आनन्द लेते रहे.

लोगों के अनुरोध पर किरण बजाज ने अपनी पसंदीदा कविता 'करीब आ रहे हैं हम, घाट के अपने रास्ते में अनेक तूफान हमें रुलाते थे'....प्रस्तुत कर भावपूर्ण वातावरण उपस्थित किया. इससे पूर्व अपने सम्बोधन में उन्होंने शब्दम् के वार्षिक कार्यों का उल्लेख करते हुए शब्द साधना की निरन्तरता बनाये रखने का

आहवान किया. उन्होंने कहा कि साधन सम्पन्न लोग हिन्दी की सेवा में जुटें. भाषा और संस्कार की धरोहर को मनोयोग से सहेजने की जरूरत है.

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे उद्योगपति और साहित्यकार बालकृष्ण गुप्त ने कहा कि ''वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला आदि तमाम विधाओं में काव्यकला सबसे सूक्ष्म है.'' उन्होंने कहा कि शब्दम् द्वारा इस श्रेष्ठ कला के विकास के लिए काम किया जा रहा है. कल-कारखाने की दुनिया के बीच यह प्रयास काफी सुखद लगता है. आयोजन की सफलता के लिए उन्होंने शब्दम् परिवार को विशेष बधाई दी. संस्था के सम्मानित सदस्य उमाशंकर शर्मा ने सभी का आभार प्रकट किया.

दोहाकार सम्मेलन में आमन्त्रित कवियों द्वारा प्रस्तुत रचनाओं के कुछ अंश

मधुमय बंधन बाँध कर, कल लौटी बारात।
हरी काँच की चूड़ियाँ, खनकीं सारी रात॥

अन्दर-अन्दर मोम था, ऊपर-ऊपर आग।
सदा पिताश्री से मिला, हमको यूँ अनुराग॥

प्राण-वायु देता सदा कुछ मित्रों का प्यार।
वरना जीवन की नदी, कैसे होगी पार ?।

-अशोक अंजुम

ये मदमाते रस-भरे, ऐन-बैन के सैन।
हुए बिहारी लाल के, दोहे तेरे नैन॥

देखे इस दरबार में, अजब-अनोखे खेल।
पूँछ हिले, कुर्सी मिले, होंठ हिले पर जेल॥

कौन, कहाँ, कैसे कहे, भीगे मन की बात।
पलक-पलक की ओट में, भादों की बरसात।

-सोम ठाकुर

संविधान की धज्जियाँ, उड़ा रहा है कौन।
इस सवाल के सामने, सारी संसद मौन॥
बिके हुए हैं लोग ये, कैसे करें विरोध।
कभी आपने है सुना, हिंजड़ा और निरोध॥

-कैलाश गौतम

नेता-चूहा एक से, कहते सकल प्रबुद्ध।
बीच सदन बिल के लिए, दोनों करते युद्ध॥

क्या कहिए इस प्रेम को, जिसका ओर न छोर।
चाँद हमारी देखकर, वे बन गए चकोर॥

बस का कंडक्टर बना, जब पार्टी-अध्यक्ष।
टिकट बाँटने की कला में था सबसे दक्ष॥

-सूर्यकुमार पाण्डेय

देते सबको फूल-फल, देते सबको छाँव।
जात पाँत जाने बिना, फैलाते हैं बाँह॥

मेरा घर खण्डहर हुआ, रही न कोई छाँव।
बड़े शहर में खो गया, मेरा छोटा गाँव॥

-जगत प्रकाश चतुर्वेदी

अनबोले बोले बहुत, बुझे अनबुझ बैन।
पहचाने उसको वही, उघरे जिसके नैन॥

सपने टूटे जा रहे, इसको जाने कौन।
जिसकी ओर निहारता, वही दिखता मौन॥

तन से दूर भले रहे, रहता मन के पास।
हो आभास तभी कि जब, मन में हो विश्वास॥

-हरिराम द्विवेदी

कैलाश गौतम को अपनी रचना 'बिटिया' भेंट करतीं किरण बजाज

'बिटिया'

घर की उजयारी सबसे न्यारी
प्यारी बिटिया सयानी बिटिया.

अँखियाँ मटकाती मुस्काती जाती
किसी बात पर मुँह फुलाती
फिर हँसकर तुरन्त गले लग जाती
प्यारी बिटिया छोटी बिटिया.

जब देखो तब ऊपर नीचे
बाहर भीतर बाग बगीचे
गिलहरी जैसे भागी जाती
चिड़िया जैसे उड़ती आती
हमारी बिटिया तुम्हारी बिटिया.
छोटी बड़ी मझली बिटिया
घर-घर की शान है बिटिया

व्रत, तीज त्यौहार है बिटिया
सावन की बौछार है बिटिया
तेज धूप में छाँह है बिटिया
सम्बधों में मिसाल है बिटिया.

दो घरों का प्रकाश है बिटिया
प्रेम का श्रृंगार है बिटिया
ममता का निर्वाह है बिटिया
सभ्यता का प्रवाह है बिटिया
अपनी ही पहचान है बिटिया.

गृहस्थी का प्राण है बिटिया
हर घर में वरदान है बिटिया
घर की उजयारी सबसे न्यारी
प्यारी बिटिया सयानी बिटिया.

-किरण बजाज

हिन्दी ग़ज़ल

''हो गई है पीर पर्वत सी''

- **विषय:** दुष्यन्त कुमार स्मृति हिन्दी गज़ल समारोह
- **दिनांक:** १६ सितम्बर २००६ • **स्थान:** ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद
- **प्रायोजक:** उ.प्र. हिन्दी संस्थान एवं शब्दम्
- **आमंत्रित ग़ज़लकार:** सोम ठाकुर, अशोक रावत, नित्य गोपाल कटारे, श्री कमलेश भट्ट 'कमल', विनोद सोनकिया, संजीव गौतम, मनोज यादव, भावना तिवारी, डॉ. जगदीश व्योम, जमुना प्रसाद उपाध्याय, ओम प्रकाश नदीम, प्रताप दीक्षित.

युग प्रर्वतक कवि दुष्यन्त कुमार को श्रद्धा सुमन अर्पित करने के पश्चात संचालक अशोक रावत ने उनके जीवन और लेखन पर प्रकाश डाला. गज़लकार कमलेश भट्ट 'कमल' ने कहा कि ''दुष्यन्त कुमार ने हिन्दी गज़ल को मुहावरों जैसी पहचान दी है. संसद से सड़क तक उनके शेर मुहावरों की तरह उद्धृत किये जाते हैं. संसद का कोई भी सत्र दुष्यन्त के शेरों के उद्धरण के बिना पूरा नहीं होता है. उनकी गज़लें संवेदना के जिस स्तर पर पहुंच कर यथार्थ से टकराती हैं वहाँ शब्दों में अर्थ का विस्फोट होता है, जो पाठकों को अपने साथ बहुत गहराई से जोड़ लेता है. वर्तमान में हिन्दी में लगभग ४००-५०० रचनाकार सृजनरत हैं, जो दुष्यन्त कुमार से उनकी रचनाधर्मिता से ऊर्जा ग्रहण करते हैं.''

डॉ. सुबोध दुबे ने दुष्यन्त के अन्तरंग संस्मरण सुनाए. विनोद सोनकिया ने दुष्यन्त की ग़ज़लों में से शेरों को उद्धृत करते हुए उनकी प्रासंगिकता एवं बाद के रचनाकारों पर पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट किया.

प्रथम सत्र के अन्त में अध्यक्षीय भाषण करते हुए सोम ठाकुर ने कहा कि ''जब किसी आन्दोलन के रूप में कोई प्रवृत्ति साहित्य में जन्म लेती है, उसके पुरोधा के नाम से युग का निर्माण होता है. इसीलिए जब अंग्रेजों के साम्राज्यवादी व्यवस्था के खिलाफ अपने नाटकों के माध्यम से भारतेन्दु ने शंखनाद किया तो वह भारतेन्दु युग कहलाया. जब संस्कृतनिष्ठ पदावली पर बल देते हुए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने समाज सुधार के लिए साहित्य का दायित्व माना तो 'द्विवेदी युग' का नाम दिया गया. इसी प्रकार दुष्यन्त कुमार ने इंदिरा गांधी के कार्यकाल में आपातकाल की अलोकतांत्रिक प्रवृत्तियों के खिलाफ आवाज उठायी और ग़ज़लकारों का एक बहुत बड़ा समूह उनके संवेदन को अनुगुंजित करने लगा और आज तक कर रहा है, अत: इस युग को 'दुष्यन्त युग' कहा जाना चाहिए. दुष्यन्त कुमार युगप्रवर्तक रचनाकार थे.'' संजीव गौतम ने दुष्यन्त कुमार की दो चुनी हुई गज़लों का पाठ किया.

दुष्यन्त कुमार के चित्र को प्रणाम करते सोम ठाकुर, साथ में प्रताप दीक्षित, डॉ. रजनी यादव

द्वितीय सत्र की प्रथम प्रस्तुति के रूप में मनोज यादव ने ''बहुत जरूरी होता है पर सब कुछ प्यार नहीं होता'' गीत पढ़ा. डॉ. रजनी यादव ने अपने बचपन की स्मृतियों को ताजा करते हुए ''पगलाए मन भटका-भटका घूमे गांव में, कैसे जीते हैं नौनिहाल सूखे छांव में'' का वाचन किया.

श्रीमती भावना तिवारी ने मन की कोमल भावनाओं को चित्रित करते हुए दो ग़ज़लें ''मीत कैसी कसक मुझको तुम दे गये ..... तेरी सांसों से मेरा लगन हो गया.'' और ''अधरों से छन्द मिल जाने दो, श्वांसों में बन्द घुल जाने दो..... फिर आज प्रणय हो जाने दो.''पढ़ी. युवा गज़लकार संजीव गौतम ने ''सबको कमियाँ हैं पता फिर भी हैं सब मौन, केवल इतनी बात है पहले बोले कौन ?'' आदि दोहे पढ़े. विनोद सोनकिया ने अपनी गज़ल ''बाहर-बाहर शोर बहुत है..... भीतरं मन कमजोर बहुत है... आदम-आदमखोर बहुत है.'' पढ़ी. कमलेश भट्ट कमल ने अपनी हाइकू कविता ''समुद्र नहीं परछाई, खुद की लाघों तो जानें, कहाँ हो कृष्ण, यत्र तत्र सर्वत्र कंस ही कंस'' तथा डॉ. जगदीश व्योम ने मातृशक्ति को समर्पित अपनी गज़ल 'मां वेदों की मूल चेतना, मां गीता की वाणी सी..... मां धरती की हरी धूप सी, मां केसर की क्यारी सी' प्रस्तुत की. वहीं नासिर अली नदीम ने 'काम कभी दिन में ऐसा करो कि रात में नींद चैन से आ सके' पढ़ा तो लोगों ने इसे बहुत पसन्द किया.

ग़ज़ल के सशक्त हस्ताक्षर जमुना प्रसाद उपाध्याय ने 'तुम्हारी पोल पट्टी खोलने लग जाये तो क्या होगा? अगर मन्दिर की मूरत बोलने लग जाये तो क्या होगा?..... वहीं सरयू का पानी खौलने लग जाये तो क्या होगा ?' साम्प्रदायिक सद्भाव पर अपनी ग़ज़ल प्रस्तुत की. ओम प्रकाश 'नदीम' ने दुष्यन्त को समर्पित एक ग़ज़ल 'मजलूम का जलाल है दुष्यन्त की ग़ज़ल, खुद हाथ खुद मशाल है दुष्यन्त की ग़ज़ल

विचार व्यक्त करते हुए विनोद सौनकिया एवं मंचासीन गज़लकार डॉ. जगदीश व्योम, संजीव गौतम, प्रताप दीक्षित, ओम प्रकाश 'नदीम', नासिर अली 'नदीम', सोम ठाकुर, कमलेश भट्ट 'कमल', भावना तिवारी, नित्य गोपाल कटारे, जमुना प्रसाद उपाध्याय एवं अशोक रावत

..... हिन्दी में बेमिसाल है दुष्यन्त की ग़ज़ल' प्रस्तुत कर श्रोताओं का दिल जीता.

कार्यक्रम का संचालन कर रहे अशोक रावत ने 'भले ही उम्र भर कच्चे मकानों में रहे, हमारे हौसले तो आसमानों में रहे'' पढ़कर जीवन की सार्थक बातें प्रस्तुत कीं. शास्त्री नित्य गोपाल कटारे ने गणपति को समर्पित अपनी रचना 'गणपति बप्पा ऐयो, रिद्धि सिद्धि लैयो' तथा संस्कृत का एक लोकगीत 'हे सखि! पतिगृह गमनम् प्रथम सुखदमपि किंच्चित् दृष्टम् वलि' प्रस्तुत किया. श्री सोम ठाकुर ने अपनी एक वाचिक कविता ''मेरी बात चलाने पर भी कहीं नहीं चलती, अब लोग कहाँ कहते हैं बाबा के किस्से.''

इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रताप दीक्षित ने अपनी गज़ल ''सत्तर पृष्ठों की पुस्तक है, पृष्ठ अधिकतर कोरे हैं, जो भी लिखे हुए हैं उनमें पढ़ने लायक थोड़े हैं..... हमने किसी और के कपड़े धोकर नहीं निचोड़े हैं.'' ''किसी का कभी कुछ बिगाड़ा नहीं है, बसा घर किसी का उजाड़ा नहीं है.'' पढ़ीं. आयोजिका डॉ. रजनी यादव के भावनात्मक धन्यवाद ज्ञापन के साथ यह दुष्यन्त स्मृति हिन्दी ग़ज़ल समारोह सम्पन्न हुआ.

दुष्यन्त कुमार के कुछ लोकप्रिय शेर

यह सारा जिस्म झुककर बोझ से दुहरा हुआ होगा
मैं सजदे में नहीं था, आपको धोखा हुआ होगा।
यहाँ तक आते आते सूख जाती हैं कई नदियाँ
मुझे मालूम है पानी कहाँ ठहरा हुआ होगा।

कैसे आकाश में सूराख़ नहीं हो सकता
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।
हो गई है पीर पर्वत सी, पिघलनी चाहिये
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिये।

सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मक़सद नहीं
मेरी कोशिश है कि सूरत बदलनी चाहिये।

यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है
चलो यहाँ से चलें और उम्रभर के लिये।

मत कहो आकाश में कोहरा घना है
यह किसी की व्यक्तिगत आलोचना है।

बाढ़ की संभावनाएँ सामने हैं
और नदियों के किनारे घर बने हैं।
आपके कालीन देखेंगे किसी दिन
इस समय तो पांव कीचड़ में सने हैं।

दुष्यन्त कुमार : सूरत बदलने की कोशिश

हिंदी कविता में ऐसा बहुत-बहुत कम हुआ है कि कोई रचनाकार अपने लेखन की शुरुआत गीतों से करे, फिर नयी कविता लिखने की दिशा में मुड़ जाए और युगीन आकांक्षाओं, विडंबनाओं और मन:स्थितियों का चित्रण करके विपुल यश अर्जित करने के बाद पुन: गीत की एक शैली ग़ज़ल कहते हुए सफलता के शिखरों का स्पर्श करके सारे परिदृश्य की सूरत ही बदल डाले. दुष्यन्त कुमार ने कुछ ऐसा ही हंगामा खड़ा करके संपूर्ण साहित्य जगत को चौंका दिया.

सचमुच दुष्यन्त ने गलियों-सड़कों, दफ्तरों-रेस्तराओं, बस-स्टॉपों, रेलवे-स्टेशनों, सभाओं, परिवारों में बोली जानेवाली भाषा को अपनी ग़ज़लों में जगह दी और इन ग़ज़लों को आम आदमी का कथ्य बना दिया.

-शेरजंग गर्ग

समकालीन कविता

''हर युग देता है कविता को नया अर्थ''

- **विषयः** अखिल भारतीय समकालीन कविता कार्यशाला
- **दिनांकः** १ व २ सितम्बर, २००६ • **स्थानः** मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
- **प्रायोजकः** उ.प्र. हिन्दी संस्थान, सुखाड़िया विश्वविद्यालय केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा एवं शब्दम्
- **आमंत्रित साहित्यकारः** डॉ. नामवर सिंह, डॉ. केदारनाथ सिंह, सोम ठाकुर, डॉ. अनामिका, डॉ. वीरेन डंगवाल, मंगलेश डबराल तथा अन्य

''कविता में अर्थ होता नहीं है, कवि द्वारा दिया जाता है . जिस तरह एक पुरानी लोककथा में राक्षस के प्राण तोते में बसते थे, उसी तरह कविता का अर्थ ढूंढ़ना भी दुरूह पहेली है. कभी अन्त में कभी बीच में कभी साँसों की लय में कविता छिपी होती है। कभी-कभी तो अर्थ समझने के लिए कविता को उलट भी देना पड़ता है...'' उक्त विचार हिन्दी आलोचना के शिखर पुरुष आचार्य नामवर सिंह, कुलाधिपति, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा ने अखिल भारतीय कविता कार्यशाला के उद्घाटन व्याख्यान में व्यक्त किये. इस कार्यशाला में गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, नई दिल्ली तथा राजस्थान से आए कवियों को सम्बोधित करते हुए

उद्घाटन भाषण प्रस्तुत करते डॉ. नामवर सिंह

नामवर सिंह ने कहा कि ''पाठक भी कविता में नये अर्थ ढूंढता है.'' आचार्य शुक्ल के पद 'सहृद्य' की पुनर्व्याख्या करते हुए उन्होंने कहा कि ''सहृदय का अर्थ हृदयसहित नहीं बल्कि (कवि के) समान हृदय वाला होता है. यही कारण है कि क्लासिक कविता को हर युग एक नया अर्थ देता है'' नामवरजी ने अपने व्याख्यान का समापन रवीन्द्र स्वप्निल प्रजापति की सद्य प्रकाशित कविता 'पुल पर खड़ी आत्मा जैसी लड़की' के वाचन के साथ किया.

समारोह के विशिष्ट अीतिथि उ. प्र. हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष सोम ठाकुर ने कहा कि नये युग की नयी संवेदनशीलता कविता के लिए नया मुहावरा गढ़ती है, किन्तु 'इलियट' के शब्दों मे परम्परा नवलेखन में रीढ़ की हड्डी की तरह अवस्थित होती है . उन्होंने नयी कविता की विशेषता 'ग्राफिक सेन्सिब्लिटी' बताया. केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के कुल सचिव चन्द्रकान्त त्रिपाठी ने कहा कि ''...संस्थान का प्रयास है कि कविताओं की संगीतात्मक प्रस्तुतियों को बढ़ावा दिया जा सके...'' उन्होंने संस्थान की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी दी. उ. प्र. हिन्दी संस्थान के निदेशक प्रभात कुमार मिश्र ने कहा कि कविता करुण हृदय का प्रवाह है क्योंकि आदि कवि वाल्मीकि का प्रथम छंद अनुष्टुप भी क्रौंच वध की व्यथा से

निकला था. मिश्र ने उ.प्र. हिन्दी संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश भी डाला.

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता कर रहे सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. एल. चौधरी ने 'गेटे' का सुप्रसिद्ध उद्धरण करते हुए कहा ''कि कविता वह है जिसका अनुवाद सम्भव नहीं हो.'' प्रो. चौधरी ने तकनीकी विषयों के उत्थान के साथ भाषाओं के शिक्षण की प्रवृत्ति घटने पर चिंता ज़ाहिर करते हुए कहा कि कविता कार्यशाला जैसे आयोजन युवा वर्ग तथा विद्यार्थियों मे साहित्य संस्कार वर्धित करते हैं. इससे पूर्व भाषा प्रयोगशाला द्वारा निर्मित एवं आशुतोष मोहन निर्देशित दो सी.डी.का विमोचन कुलपति प्रो. चौधरी एवं प्रो. नामवर सिंह ने किया.

कार्यशाला के उपलक्ष्य में महाविद्यालय द्वारा आयोजित कविता पाठ एवं कविता पोस्टर प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया. संचालन कर रहे हिन्दी विभाग के अध्यापक डॉ. पल्लव ने कहा कि अतिवाद कविता के लिए दोष नहीं अनिवार्य तत्व है. युवा कवियों की कविताओं की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि कथ्य की विविधता और मानवीय सम्बन्धों पर सशक्त टिप्पणी की क्षमता यह दर्शाती है कि समकालीन कविता पर लगाया जाने वाला एकरसता और एकसेपन का आरोप सही नहीं है. सत्र की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ कवि नन्द चतुर्वेदी ने कहा कि यह सम्भव नहीं कि हम अपने समय से अलग होकर कोई नई सृष्टि रचें और क्योंकि हम समान सुखों-दुखों को भोगते हुए कविता रचते हैं, इसलिए ही एक युग की कविता एक जैसी लगती है. उन्होंने इसे दोष नहीं वरन् साधारणीकरण का सिद्धान्त बताया. इस सत्र का संचालन हिमांशु पण्ड्या ने किया.

समापन समारोह में सुप्रसिद्ध कवि प्रो. केदारनाथ सिंह ने समापन व्याख्यान देते हुए कहा कि कार्यशाला मूलतः समाज विज्ञान से आया शब्द है, लेकिन कविता में कार्यशाला के आयाम बदल जाते हैं. सामूहिक साहचर्य से कविगण कविता कौशल और काव्य संवेदन के सम्बन्धों को गहराई से समझ पाते हैं. उन्होंने जापानी कविता शैली 'रिंगो' का उल्लेख किया, जिसमें एक विषय वस्तु पर अलग-अलग कवि एक एक पंक्ति जोड़कर सामूहिक कविता तैयार करते हैं. प्रो. सिंह ने कहा कि कार्यशालाओं के इस प्रकार के नये सर्जनात्मक विधान भी सर्जित किए जा सकते हैं. उन्होंने कहा कि कविता एकमात्र ऐसा माध्यम है, जिसमें समाप्ति की भी समारोहधर्मी सर्जना की जा सकती है अतः समापन समारोह तो कविता कार्यशाला के लिए ही सर्वाधिक उपयुक्त शब्द है. प्रो. सिंह ने कहा कि वे कार्यशाला से ''ऊँटगाड़ी पर लदे हुए नमक'' का बिम्ब लेकर लौट रहे हैं, जो उनके भीतर युवा कवि प्रभात की कविता से उपजा है. सभी प्रतिभागियों एवं सहयोगी संस्थानों के प्रति अधिष्ठाता प्रो. आर.एन. व्यास ने आभार माना. इस सत्र का संचालन डॉ. ममता पानेरी ने किया.

समापन सत्र में वक्तव्य देते हुए कवि केदारनाथ सिंह. साथ में उपस्थित डॉ. अनामिका, सोम ठाकुर, डा. वीरेन डंगवाल एवं डॉ. सुबोध दुबे

नमक

साँभर झील से भराया
भैरु मारवाड़ी ने
बंजारा नमक लाया
ऊँट गाड़ी में.

बर्फ जैसी चमक
चाँदी जैसी गनक
चाँद जैसी बनक
अजी देसी नमक
देखो ऊँट गाड़ी में
बंजारा नमक लाया
ऊँट गाड़ी में.

कोई रोटी करती भागी
कोई दाल चढ़ाती आयी
कोई लीप रही थी आँगन
बोली हाथ धोकर आयी
लायी नाज थाली में
बंजारा नमक लाया
ऊँट गाड़ी में.

थोड़ा घर की खातिर लूंगी
थोड़ा बेटी को भेजूंगी
महीने भर से नमक नहीं था
जिनका लिया उधारी दूंगी
लेन देन की मची है धूम
घर गुवाड़ी में
बंजारा नमक लाया
ऊँट गाड़ी में.

कब हाट जाना होता
कब खुला हाथ होता
जान बूझ कर नमक
जब न भूल आना होता
फीके दिनों में नमक
मारवाड़ी ने
बंजारा नमक लाया
ऊँट गाड़ी में.

-प्रभात

वनश्री

आज मुझे वनश्री के चरण दिखे
काली, चमकीली, सूनी सड़क के किनारे
शीश पर या चंदोवा फागुनी आकाश का
पलाशों की
चटख लाल हंसी ये
प्रतिध्वनित थी दिशाएं
देह सुरभि व्याप्त थी हवा में
मंडराते
मदहोश भ्रमर,
कौए संधान नहीं पाते थे लक्ष्य का
रह रह कर उड़ती थी धूल
वृक्ष हिलते थे
तभी एक पल में यह खुल गया रहस्य
किसके कोमल पदाघात से
नव-पल्लव खिलते थे.

- सदाशिव श्रोत्रिय

स्मृति पर पुल

एक विशालकाय पुल पर खड़ा था
नीचे गंगा बह रही थी
एक नाव दूर जा रही थी धारा के साथ
शायद उसे दूर ही जाना था.

अपने गांव की नदी का पुल मुझे उस समय भी याद था
जब मैं उस विशालकाय पुल पर खड़ा था
नीचे की ओर देख रहा था, जहाँ अथाह जल राशि थी
घाटों पर मुरदे जल रहे थे.

मैं अपने गांव की नदी पर बने पुल से नीचे कूदता था
और तैर कर बाहर आ जाता था.

कूदने की स्मृति से देह में झुरझुरी हुई !
मैं पुल से जल्दी-जल्दी बाहर आ गया
अब कूदने की हद से बाहर था

और... जितनी जल्दी हो सके, अपने गांव नोनीहाट
पहुंच जाना चाहता था
जो अब भी पटना से तीन सौ बीस किलोमीटर दूर था।

- विनय सौरभ

लोकभाषा और साहित्य

''मस्जिद में पुजारी हो तो मन्दिर में नमाज़ी''

- **विषय:** कबीर एवं रसखान के साहित्य की प्रासंगिकता (स्मृति समारोह)
- **दिनांक:** २३ जून, २००६ • **स्थान:** उ. प्र. हिन्दी संस्थान, लखनऊ
- **प्रायोजक:** उ.प्र. हिन्दी संस्थान एवं शब्दम्
- **आमंत्रित कविगण:** डॉ. विश्वनाथ तिवारी, जाहिल सुल्तानपुरी, डॉ. मलिकजादा मंजूर अहमद, डॉ. मुहम्मद युनुस उस्मानी, उदयप्रताप सिंह, सोम ठाकुर, कैलाश गौतम, योगेश्वर, रफीक सदानी, वाहिद अली वाहिद, नासिर अली नदीम, अंसार कंबरी, दीन मुहम्मद 'दीन', फारुख सरल, मासूम गाजियाबादी, मोहतरमा शमा परवीन एवं प्रभात मिश्र.

क्रांतिकारी कवि कबीर और कृष्णभक्तिमार्गीय कवि रसखान के साहित्य की प्रासंगिकता पर कार्यक्रम में विद्वानों ने गंभीरता से चर्चा की.

समारोह के प्रथम सत्र में डॉ. विश्वनाथ तिवारी ने कहा कि कबीर ने जितना मन के बारे में लिखा और मार्गदर्शन किया उतना अन्य किसी ने नहीं वे जानते थे कि आदमी के लिए अपने मन को जीतना ही सबसे कठिन होता है. उन्होंने कहा कि कबीर को सारी शक्ति अध्यात्म, नैतिक संवेदना और आस्थापरक दृष्टि से मिली थी. उन्होंने आध्यात्मिकता और सामाजिक स्तरों के वृहद आयामों को इतने व्यापक रूप से अभिव्यक्त किया है कि उनके बारे में कहते समय विशेष सावधानी की आवश्यकता है. कबीर ने अद्वैत और वेदान्त जैसे विषय को बोलचाल की भाषा में अभिव्यक्त कर दिया. मन को निर्मल कर के विसंगतियों की छोटी दीवारों को ढहा कर उदात्त और शक्तिशाली बनाते हुए आध्यात्मिक प्रगति का रास्ता बताया. उन्होंने कहा कि कबीर ने हिन्दू-मूसलमान सभी से निर्भीक होकर धार्मिक पूजा पद्धतियों की सीमा रेखा को पार कर आगे बढ़ने की बात भी प्रमुखता से कही.

दीप प्रज्ज्वलित करते सोम ठाकुर. साथ में मलिकजादा मंजूर एवं उमाशंकर शर्मा

रसखान को सजीव शब्दों का रचयिता बताते हुए जाहिल सुल्तानपुरी ने कहा कि उनकी काव्यप्रेम, श्रृंगार और सौन्दर्य की एकदम अलग दृष्टि है.

उर्दू अकादमी के अध्यक्ष डॉ. मलिकजादा मंजूर अहमद ने कहा कि जिसने जनता की भाषा को समझा, उसकी बात दूर तक पहुँची.

डॉ. मुहम्मद यूनुस उस्मानी ने भाषायी एकता की बात की.

राज्यसभा सदस्य और कवि उदयप्रताप सिंह ने शब्दम् की अध्यक्ष किरण बजाज द्वारा हिन्दी के लिए किए जो रहे सफल - सार्थक कार्योंका विवरण दिया. उन्होंने हिन्दी-उर्दू एकता की बात पर बल देते हुए

कहा कि ''शनै: - शनै: विश्व में हिन्दी का प्रसार हो रहा है तथा जल्द ही हिन्दी को इंग्लैण्ड में दूसरी भाषा का दर्जा मिल जाएगा. उन्होंने कहा कि वे शब्दम् के उपाध्यक्ष हैं और हिन्दी संस्थान से भी जुड़े रहे हैं अत: इस कार्यक्रम में दोनों ही का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं.

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के कार्यकारी उपाध्यक्ष सोम ठाकुर ने कबीर एवं रसखान को हिन्दी साहित्य का ठोस धरातल बताया.

डॉ. योगेश्वर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कबीर और रसखान के कृतित्व का परिचय देते हुए विद्वानों को परामर्श दिया कि किसी की भी प्रशंसा करते हुए किसी दूसरे का छोटा कहने से बचना चाहिए.

शब्दम् की ओर से उमाशंकर शर्मा ने कार्यक्रम के आयोजन के लिए उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, समस्त आमंत्रित कवियों, वक्ताओं व श्रोताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया. श्री शर्मा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि वाग्देवी अव्यक्त रूप में रहती हैं. उनका व्यक्त रूप शब्द और भाषा है, जो कि कबीर और रसखान जैसे महान लोगों से होकर पाठकों पर सुधारात्मक प्रभाव डालती है. कार्यक्रम का संचालन हिन्दुस्तानी एकेडमी के अध्यक्ष कैलाश गौतम ने अपनी विद्वतापूर्ण टिप्पणियों के साथ किया.

कार्यक्रम के द्वितीय सत्र में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें जनाब रफीक सदानी, वाहिद अली वाहिद, नासिर अली नदीम, अंसार कंबरी, दीन मुहम्मद 'दीन', फारुख सरल, मासूम गाजियाबादी तथा मोहतरमा शमा परवीन आदि कवियों ने श्रेष्ठ रचनाओं के पाठ से पूरे कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की. अंत में उ.प्र. हिन्दी संस्थान के निदेशक प्रभात मिश्र ने शब्दम् के प्रति आभार व्यक्त किया और विश्वास प्रगट किया कि भविष्य में भी दोनों संस्थाएं मिल कर कार्यक्रम कराती रहेंगी.

कार्यक्रम में आमंत्रित वक्ता एवं कविगण

कार्यक्रम में प्रस्तुत रचनाओं के अंश :

हम हिन्दी पर कुर्बान हुए हम हिन्दुस्तानी मुसलमान
भाषा से धर्म नहीं जोड़ा, हो भले अलग अपनी जुबान

- दीन मुहम्मद 'दीन'

प्रिय तुम्हारा मौन रहना शाश्वत संवाद है,
बोल उठते हो कभी तुम यह मधुर अपवाद है.
चाहने वालों ने पहले ही तुम्हें सब कह दिया,
कुछ नवीन अब कैसे होगा ? अब तो बस अनुवाद है.

- नासिर अली नदीम

प्यार कविता प्यार ही रस छन्द है.
जिन्दगी का प्यार में आनन्द है.
प्यार जिसकी जिन्दगी में ना शमा
जिन्दगी उसकी तो बस इक द्वन्द है.

- कु. शमा परवीन

उनके कूचे में जो पहचाने गए.
मार खाई, मुफ्त में थाने गए.
शमा तक पहुँचे न थे जाहिल अभी
छिपकली के मुँह में परवाने गए.

- जाहिल सुल्तानपुरी

हमेशा तंग दिल दानिशवरों से फासला रखना.
मणी मिल जाए तो क्या साँप डसना छोड़ देता है.
मियाँ इतनी भी लम्बी दुश्मनी अच्छी नहीं होती
कि कुछ दिन बाद काँटा भी करकना छोड़ देता है.

- मासूम गाज़ियाबादी

शायर हूँ कोई ताज़ा गज़ल सोच रहा हूँ.
फुटपाथ पे बैठा हूँ महल सोच रहा हूँ.
मस्जिद में पुजारी हो तो मन्दिर में नमाज़ी,
हो किस तरह ये फेर बदल सोच रहा हूँ.

- अंसार कम्बरी

कौन ठगना नगरिया लूटल हो॥
चंदन काठ कै बनल खटोलना,
तापर दुलहिन सूतल हो ॥
उठो री सखी मोरी माँग सँवारो,
दुलहा मो-से रुठल हो ॥
आए जमराज पलँग चढ़ि बैठे,
नैनन अँसुवा टूटल हो ॥
चारि जने मिलि खाट उठाइन,
चहुँ दिसि धू-धू ऊठल हो ॥
कहत 'कबीर' सुनो भई साधो,
जग से नाता छूटल हो ॥

-कबीरदास

जा दिन तैं वह नंद को छोहरो,
या बन धेनु चराइ गयो है ।
मोहिनी तानि गोधन गाइकै,
बेनु बजाइ रिझाइ गयो है ॥
ताही घरी कछु टोना सो कै,
'रसखान' हिये में समाइ गयो है।
कोउ न काहू की कानि करै,
सिगरो ब्रज बीर बिकाइ गयो है ॥

सोहत है चँदवा सिर मोर को,
तैसिय सुंदर पाग कसी है ।
वैसिय गोरज भाल बिजारत,
जैसी हिये बनमाल लसी है ॥
'रसखान' बिलोकत बौर भई,
दृग मूँदि कै ग्वालि पुकार हँसी है ॥
खोलि री घूँघट, खोलौं कहा,
वह मूरति नैननि माँझ बसी है ॥

-रसखान

हिन्दी नाटक

'चरनदास चोर' - न्यूजीलैण्ड में

- **विषयः** नाटक
- **दिनांकः** २१ और २३ जुलाई २००६ • **स्थानः** ऑकलैंड - न्यूजीलैण्ड
- **प्रायोजकः** 'प्रयास' एवं शब्दम्
- **कलाकारः** जाय चटर्जी, उज्जवल घोष, केशिया हन्डा, कंचन बन्दोपाध्याय, राजदीप मुखर्जी, बिरशा ओहदेदार, रनबीर घोष, पदमा अकुला, वृत्तिका मलानी, दिव्या हरिचरन, स्वाति शर्मा, प्रणति पथिपति, विक्रम बनर्जी, कबीर सेनगुप्ता, जीत चटर्जी एवं अमित ओहदेदार, सुदिप्ता व्यास, नीलांजन घोषाल, आलोक घोष, सनजीत दत्ता

जुलाई २००६ में, शब्दम् की भावना हजारों मील का फासला तय करते हुए ऑकलैंड, न्यूजीलैंड जा पंहुची. शब्दम् ने कला और संस्कृति के जरिए भाषा का प्रचार-प्रसार करने के लिए 'प्रयास' संस्था के साथ हाथ मिलाया है और इसके फलस्वरुप एक विख्यात भारतीय नाटक 'चरनदास चोर' पेश किया गया.

इस गठबंधन को साकार रूप दिया आकलैंड स्थित हमारी परामर्शदाता संपादक तथा मित्र सुदीप्ता व्यास ने, जो कि एक सांस्कृतिक दल 'प्रयास' की महासचिव हैं. ऐसा पहली बार हुआ है जब किसी भारतीय सांस्कृतिक संस्था द्वारा न्यूजीलैंड में एक सांस्कृतिक प्रस्तुति का सह प्रायोजन किया गया.

चरनदास चोर (चरनदास - एक ईमानदार चोर) - हबीब तनवीर का एक सशक्त, मनोरंजक तथा रोमांचित कर देने वाला नाटक है जो कि एडिनबरा फ्रिंज फेस्टिवल में एक श्रेष्ठ सम्मान जीत चुका है. इसे ऑकलैंड में २१ जुलाई तथा २३ जुलाई २००६ को मंचित किया गया.

'प्रयास', न्यूजीलैंड के भारतीयों द्वारा गठित एक अलाभकारी संगठन है, जिसका लक्ष्य है न्यूजीलैंड के दर्शकों को श्रेष्ठ समकालीन भारतीय रंगमंच की झलक दिखाना और एकात्मकता का प्रयास करना. नाटक को मूल छत्तीसगढ़ी बोली से अंग्रेजी में

चरनदास चोर : एक दृष्य

चरनदास चोर और सिपाही

अनूदित किया गया है. अनेक भारतीय शब्दों और अभिव्यक्तियों को वैसा ही रहने दिया गया है ताकि हिन्दी भाषा की खूबी नाटक में कायम रहे.

नाटक का मंचन अत्यन्त सफल रहा. इसे देखने के लिए न्यूजीलैंड कला जगत के अनेक विशिष्ट सदस्य तथा सांसद पधारे. दर्शकों में उत्साही न्यूजीलैंडवासी एवं भारतीय दोनों ही शामिल थे. नाटक की समाप्ति के बाद निर्देशक अमित ओहदेदार ने दर्शकों को संबोधित किया तथा शब्दम् की विचारधारा एवं दर्शन के बारे में लोगों को बताया, जिसकी सबने काफी प्रशंसा की. उन्होंने आशा की कि शब्दम् न्यूजीलैंड में लंबे समय तक इसी प्रकार अपना रचनात्मक योगदान देता रहेगा तथा भारत व अंर्तराष्ट्रीय जगत में एक उज्जवल पहचान बनाएगा. उन्होंने बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड की भूमिका का भी उल्लेख किया.

कहानी एक चोर से संबंधित लोककथा पर आधारित है. चरनदास एक चोर है, जो खुलेआम लोगों को ठगता, लूटता और कानून की आँखों में धूल झोंकता रहता है. इसके बावजूद वह सिद्धान्तों को मानने वाला एक व्यक्ति भी है, जिसकी अपनी निष्ठा, नैतिकता है एवं पेशेवर दृष्टि से निपुणता है. वह अपने गुरु के समक्ष मजाक में कुछ कसमें खाता है जैसे कि वह सोने की थाली में कभी खाना नहीं खाएगा, कभी हाथी की पीठ

चरनदास चोर–चरम प्रस्तुति के क्षण

पर सवारी नहीं करेगा, कभी रानी से शादी नहीं करेगा आदि. इधर भाग्य चक्र भी ऐसी चाल चलता है कि उसका सामना इन सभी परिस्थितियों से होता है, मगर वह गुरु के दिए वचन का सच्चा है, इसलिए वह इन सभी प्रलोभनों को ठुकरा देता है. अंत में उसकी मृत्यु का कारण भी वही रानी बनती है जिसके विवाह के प्रस्ताव को वह पहले ठुकरा चुका था. यह नाटक अपने चतुर हास्य, मधुर लोकसंगीत व नृत्यों, रंग तथा जीवन्तता से भरपूर मनोरंजन देने की क्षमता रखता है. साथ ही साथ, यह नाटक दर्शकों के सामने मौजूदा सामाजिक मूल्यों पर कुछ प्रश्न भी खड़े करता है.

अधिक जानकारी के लिए information@prayas.co.nz पर ई-मेल करें या वेबसाइट www.payas.co.nz पर पधारें.

नृत्य करती ग्रामीण बालायें

चरनदास चोर – भाग लेने वाले कलाकार

हिन्दी नाटक

'विडम्बना' जीवन की

- **विषय:** समाज में फैली विसंगतियों को दूर करने तथा जन सामान्य को जागृत करना
- **दिनांक:** १६ फरवरी २००६ • **स्थान:** हिन्द परिसर उ.प्र
- **प्रायोजक:** हिन्द स्टाफ क्लब एवं शब्दम्
- **कलाकार:** बी.पी.वर्मा, प्रमोद बाबू, वी.एस. पाल, प्रमोद कुलश्रेष्ठ, अवधेश कुमार, अनिल गोयल, राजीव सक्सेना, अभिनव कुलश्रेष्ठ, अभिनय सिंह, राजेन्द्र राजपाल, राजेन्द्र सिंह, अपूर्व यादव, प्रदीप कुमार, साक्षी कुलश्रेष्ठ.

नाटक का शुभारम्भ करते हुए शब्दम् संस्था की अध्यक्ष किरण बजाज ने नाटकों के माध्यम से समाज में फैली विसंगतियों को दूर करने तथा जन सामान्य को जागृत करने का आहवान किया. उन्होंने कहा कि नाटक नई चेतना जागृत करने का सशक्त माध्यम है . समाज में फैली विकृतियों पर करारा प्रहार करते हुए उन्होंने कहा कि ''नाटक ऐसी विधा है जिसे आम आदमी भी समझ सकता है तथा इन विसंगतियों को दूर करने का प्रयास कर सकता है.''

हिन्द लैम्प्स के ओ. पी. खण्डूड़ी द्वारा निर्देशित एवं अनिल कुमार मिश्रा द्वारा लिखित नाटक ''विडम्बना'' के माध्यम से आज के राजनैतिक भ्रष्टाचार एवं कुरीतियों पर सीधा व्यंग्य किया गया. इसके साथ ही नियति ही नियामक है, का सूक्ति वाक्य भी नाटक के माध्यम से चरितार्थ किया गया.

भावपूर्ण प्रस्तुति में अवधेश यादव, विजेन्द्र पाल, प्रमोद कुलश्रेष्ठ

नेता तोमर एक भ्रष्ट राजनेता है जो प्रशासनिक अधिकारियों की मिली भगत से लूट खसोट करके तिजोरी भरता है. रुपये की हवस के लिए गरीब असहाय मासूम बच्चों से लेकर हिजड़ों तक को चूसने में कसर नहीं छोड़ता. अपनी पार्टी के नाम पर चंदा लेना, उल्टे सीधे रास्ते अपनाकर पैसा बटोरना ही उसका धंधा है. लम्बे समय के बाद उसके घर में इस धन को भोगने वाला वारिस पैदा होता है. इस खुशी में मन रहे जश्न में भेदिए से पता चलता है कि पैदा होने वाला एक हिजड़ा है. इतना सुनते ही हिजड़ों को मौका मिलता है, अपना तोमर से पिछला बदला लेने का. हिजड़े अपनी पर आ जाते हैं. अन्त में अपनी छाती पर पत्थर रखकर तोमर को अपना बेटा देना पड़ता है. कुदरत ने तोमर को करारा तमाचा मारा और भ्रष्ट अधिकारियों तथा राजनेताओं को एक सबक मिला.

कलाकार वी. पी. वर्मा, प्रमोद बाबू यादव का अभिनय सराहनीय था. वी. एस. पाल, प्रमोद कुलश्रेष्ठ 'तन्हा', अवधेश सिंह, राजेन्द्र राजपाल, रामवीर सिंह, अपूर्व यादव और प्रदीप कुमार, कु. साक्षी कुलश्रेष्ठ आदि ने अपना प्रभावपूर्ण अभिनय कर इसे मूर्त रूप प्रदान किया , जिसे दर्शकों ने खूब सराहा.

''हे गोविन्द राखो शरण''

- विषयःशास्त्रीय गायन
- दिनांक :३० अगस्त, २००६ ● स्थानःबी.डी.एम. म्यू. कन्या महाविद्यालय, शिकोहाबाद
- प्रायोजकःबी.डी.एम. म्यू. कन्या महाविद्यालय, 'स्पिक मैके' एवं शब्दम्
- प्रस्तुतीकरणःरीतेश मिश्र एवं रजनीश मिश्र, नीतू बंसल, डॉ. अल्पना सक्सेना.

पंडित रीतेश व रजनीश मिश्र ने राग मुल्तानी से अपना गायन शुरू किया. बड़े ख्याल में - 'मेरी बगिया में न आना दिलबर' एवं द्रुत खयाल की एक ताल में 'आँगन में नाचत नंदलाल' को भावपूर्ण ढंग से गाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया. कलाकारों ने एक समापन भजन 'हे गोविन्द राखो शरण अब तो जीवन हारे...' गाकर किया. राजेश मिश्र, अविनाश व शशांक ने वाद्य यंत्रों पर संगत दी. हारमोनियम पर श्रीमती नीतू बंसल व तबले पर डॉ.अल्पना सक्सेना ने संगत दी.

शब्दम् के सचिव डॉ. सुबोध दुबे ने राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों का परिचय देते हुए बताया कि मिश्र बंधु, पंडित राजन व साजन मिश्र के पुत्र तथा मिश्र घराने के छठे वंशज हैं. उनका शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया. सांस्कृतिक परिषद की अध्यक्षा डॉ. मिथिलेश दीक्षित ने पुष्प गुच्छ भेंट किये. छात्राओं ने स्वागत गान प्रस्तुत किया. महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. कांता श्रीवास्तव ने अध्यक्षता की. संगीत विभाग की अध्यक्ष व रीडर डॉ. विनीता सक्सेना ने कार्यक्रम का संयोजन व संचालन किया.

शास्त्रीय गायन की छटा बिखेरते मिश्र बन्धु

सात्विक वीणा वादन

- **विषयः** सात्विक वीणा वादन
- **दिनांकः** १९ अप्रैल, २००६ • **स्थानः** स्टाफ क्लब हिन्द परिसर
- **प्रायोजकः** स्पिक मैके एवं शब्दम्
- **प्रस्तुतीकरणः** सलिल भट्ट एवं पृथ्वीराज मिश्र.

ग्रेमी अवार्ड विजेता, विश्वविख्यात वीणा वादक पं. विश्वमोहन भट्ट के शिष्य एवं यशस्वी पुत्र, विख्यात संगीतकार पंडित सलिल भट्ट द्वारा सर्जित 'सात्विक वीणा' वादन के इस कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं को शास्त्रीय वाद्य संगीत का निकटतम अनुभव प्राप्त हुआ.

नवनिर्मित वाद्य 'सात्विक वीणा' के बारे में भी कार्यक्रम में जानकारी दी गयी. इस वाद्य पर एक ही आघात से दर्जनों स्वर का सृजन किया जा सकता है. गुलाब की लकड़ी से बनायी गयी इस वीणा की ये भी विशेषता है कि इसमें कोई जोड़ नहीं है. सलिल भट्ट पिछले १५ वर्ष से इस वीणा के द्वारा अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं.

वीणा वादन के द्वारा श्री सलिल भट्ट ने राग श्रावणी, राग योग आदि रागों के प्रस्तुतिकरण से मंत्रमुग्ध किया. पृथ्वीराज मिश्र की तबले की संगत ने वीणा के स्वरों को गम्भीर बनाया.

'स्पिक मैके' की जिला कॉर्डिनेटर डॉ. राजश्री ने बताया कि ये संस्था युवाओं में भारतीय संगीत एवं संस्कृति के जागरण का कार्य कर रही है.

रागों का प्रस्तुतिकरण करते सलिल भट्ट एवं उनके सहयोगी पृथ्वीराज मिश्र

'मोहिनीअट्टम' नृत्य

- **विषय:** शास्त्रीय नृत्य 'मोहिनी अट्टम'
- **दिनांक:** २५ अगस्त, २००६ • **स्थान:** यंग स्कॉलर्स एकेडमी, शिकोहाबाद
- **प्रायोजक:** यंग स्कॉलर्स एकेडमी, 'स्पिक मैके' एवं शब्दम्
- **प्रस्तुतीकरण:** पद्मश्री भारती शिवाजी

शास्त्रीय नृत्य 'मोहिनी अट्टम' का प्रस्तुतीकरण पद्मश्री भारती शिवाजी ने किया. उन्होंने इसका परिचय देते हुए कहा कि मोहिनीअट्टम केरल का सुप्रसिध्द अर्धशास्त्रीय नृत्य है, जिसकी परम्परा कथकली से भी पुरानी है. यह केरल के मन्दिर प्रांगणों में अभिनीत किया जाता रहा है. भरतनाट्यम, कुचीपुड़ी तथा ओडिसी नृत्यों की तरह ही यह भी देवदासी नृत्य परम्परा का ही अंग है.

मोहिनी का अर्थ ही है 'देखने वाले के हृदय को मोह लेना' और अट्टम का अर्थ है 'नृत्य'. मोहिनीअट्टम भगवान विष्णु की 'भस्मासुर वध' एवं क्षीरसागर के समुद्रमंथन की कथा से जुड़ी है जिसमें भगवान स्वयं मोहिनी रूप धारण कर जन-जन को लुभाते हैं.

मोहिनीअट्टम का आधार है प्रेम और प्रभु की भक्ति. भगवान श्रीकृष्ण और विष्णु इसके आराध्य हैं. यह अपनी संरचना में भरतनाट्यम से मिलता जुलता तथा ओडिसी नृत्य की कलात्मक भंगिमाओं को सँजोता है.

हाथों की मुद्रायें प्रसिद्ध ग्रंथ 'हस्त लक्ष्य दीपका' पर आधारित होती हैं और गायन कर्नाटक शास्त्रीय संगीत 'मणिप्रवाल' भाषा में होता है, जो कि संस्कृत और मलयालम का मिश्रण है. इसी भाषा में मोहिनीअट्टम के पद गाये जाते हैं. जिन्हें राजा स्वाति तिरुनल और अरियम्मन थम्पी ने रचा है.

भारती शिवाजी ने 'मोहिनीअट्टम' की प्रस्तुति कर दर्शकों के मन मोह लिया. उनकी आँखों की पुतलियों तथा नृत्य भंगिमाओं ने दर्शकों को ताली बजाने पर विवश कर दिया. अन्त में यंग स्कोलर एकेडमी के निदेशक डॉ. ऐ. के. आहूजा ने समस्त अतिथियों एवं दर्शकों दे प्रति आभार प्रगट किया. कार्यक्रम का संयोजन एकेडमी की प्रधानाध्यापिका रश्मि मैंगी ने किया.

पद्मश्री भारती शिवाजी द्वारा मोहिनीअट्टम की भाव प्रस्तुति

''गंगा उदास है''

- **विषयः** गंगा के पौराणिक स्वरूप एवं गंगा का लोक मंगल रूप.
- **दिनांकः** ३ जून, २००६ • **स्थानः** हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
- **प्रायोजकः** हिन्दुस्तानी एकेडमी एवं शब्दम्
- **आमंत्रित साहित्यकारः** कैलाश गौतम, भगवत्शरण शुक्ल, रागिनी चतुर्वेदी, वीरभद्र मिश्र, संत विष्णु ब्रह्मचारी, प्रेमशंकर गुप्त, रवीन्द्र गुप्ता, यश मालवीय, हरिराम द्विवेदी, मल्लिका चटर्जी, प्रियंका चौहान.

'गंगा उदास है' शीर्षक से हुए इस कार्यक्रम में संस्कृति और साहित्य ने अपनी दृष्टि से गंगा की पीड़ाओं को प्रस्तुत किया. गंगा के पौराणिक स्वरूप, गंगा का लोक मंगल रूप, गंगा के प्रति सोच बदलनी होगी, जैसे विषयों पर विद्वानों ने अपने विचार रखे.

डॉ. भगवतशरण शुक्ल ने गंगा के पौराणिक संदर्भों पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कहा कि पुराणों में गंगा अवतरण के बारे में अनेक मत दिये गये हैं, लेकिन यह अब तक निर्विवाद सत्य है कि गंगा हमारी संस्कृति का सफल संरक्षण करती रही है.

गंगा स्तुति की भावपूर्ण मुद्रा में बालिकाएं

'गंगा उदास है' कार्यक्रम में विचार व्यक्त करते कैलाश गौतम

इस विषय को और विस्तार देते हुए श्रीमती रागिनी चतुर्वेदी ने कहा कि देश में नदियों का सम्मान आरम्भ से होता आया है, लेकिन गंगा का सम्मान सर्वोपरि है. उन्होंने कहा कि भूगोल की दृष्टि से गंगा अपने उद्गम से लेकर तीर्थराज प्रयाग के संगम और गंगा सागर तक दिखाई देती है, लेकिन भाव और संकल्प के स्तर पर गंगा लोक मानस में मूल्य और संवेदना की तरह दूर-दूर तक रची बसी है.

प्रो. वीरभद्र मिश्र ने गंगा की वेदना से प्रयागवासियों को जोड़ा. उन्होंने बताया कि ''बनारस से शोधार्थियों की एक टीम प्रतिरात चलती है और वह सुबह तक गंगाजल के नमूने एकत्र करती है, उन नमूनों का बनारस में परीक्षण किया जाता है। उन्होंने कहा कि इससे सम्बन्धित आंकड़ों से पता चलता है कि गंगा लगातार प्रदूषित हो रही है। उन्होंने कहा कि आवश्यकता इस बात की है कि सरकार ऐसा कानून बनाये जिससे गंगा में किसी भी प्रकार का कल-कारखानों, घरों आदि का अवशिष्ट जल न पहुँचे.

प्रख्यात संत विष्णु ब्रह्मचारी ने कहा कि गंगा नहीं रही तो भारतीय संस्कृति भी नहीं रहेगी. अवकाश प्राप्त न्यायाधीश माननीय प्रेमशंकर गुप्त ने कहा कि गंगा योजना के अरबों रुपये व्यय हो गये। सरकार चाहे जितने कानून बना दे, जब तक कार्यपालिका सहयोग नहीं करेगी, तब तक सार्थक परिणाम नहीं हासिल होंगे.

इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुए. गंगा के तट पर संध्यावंदन की परिकल्पना को साकार करते हुए कलाकारों ने गंगा-स्तुति की संगीतमय प्रस्तुति दी. साथ ही गीत, संगीत और नृत्य की विभिन्न प्रस्तुतियों ने उपस्थित श्रोताओं के मन को झंकृत कर दिया.

कवियों ने गंगा के पौराणिक एवं पर्यावरणीय महत्व को अपनी कविताओं में रेखांकित कर यह संदेश दिया कि प्रत्येक व्यक्ति गंगा संरक्षण की भावना को अपने निजी सरोकारों की श्रेणी में लाये. कार्यक्रम में डॉ. भगवतशरण शुक्ल, रागिनी चतुर्वेदी, रवीन्द्र गुप्ता, यश मालवीय, हरिराम द्विवेदी, कैलाश गौतम, प्रो. वीरभद्र मिश्र आदि साहित्यकारों के अलावा मल्लिका चटर्जी, प्रियंका चौहान आदि कलाकारों ने भाग लिया. कार्यक्रम के समापन पर शब्दम् के सचिव डॉ. सुबोध दुबे ने अपनी संस्था का परिचय और उपलब्धियों की जानकारी देते हुए सभी का आभार प्रकट किया.

प्रो. वीरभद्र मिश्र का माल्यार्पण कर स्वागत करते शब्दम् सचिव डॉ. सुबोध दुबे

गूँगी गंगा

गंगा की बात क्या करूँ गंगा उदास है
वह जूझ रही खुद से और बदहवास है
न अब वो रंगोरूप है न वो मिठास है
गंगाजली को जल नहीं गंगा के पास है।।

दौड़ा रहे हैं लोग इसे खेत-खेत में
मछली की तरह स्वंय तड़पती है रेत में
बंधों के जाल में कहीं नहरों के जाल में
सिर पीट-पीट रो रही शहरों के जाल में
नाले सता रहे हैं पनाले सता रहे हैं
खा-खा के पान थूकने वाले सता रहे हैं
कुल्हड़ पड़े हैं चाय के पत्ते हैं चाट के
आखिर कहाँ ये जायेंगे धंधे हैं घाट के
भीटे की तरह बाप रे कूड़े का ढेर है
यह भी है कोई रोग कि ऊपर का फेर है
असहाय है लाचार है मजबूर है गंगा
अब हैसियत से अपनी बहुत दूर है गंगा
शीशे में खुद को देख परेशान है गंगा
मैदान ही मैदान है मैदान है गंगा
कुछ ही दिनों की देश में मेहमान है गंगा
गंगा की बात क्या करूँ गंगा उदास है।।

टीलों की प्यास मन से बुझाती चली गंगा
पेड़ों की छाँह-छाँह छहाँती चली गंगा
घर-घर का सारा पाप बहाती चली गंगा
उजड़े हुए नगर को बसाती चली गंगा
गंगा की बात क्या करूँ गंगा उदास है।।

न पीने के लिए है न नहाने के लिए है
गंगा भी आज खाने कमाने के लिए है
हर घाट यात्री को फँसाने के लिए है
बोरे में बँधी लाश छिपाने के लिए है
गंगा में आज नाव दिखाने के लिए है
हथियार और दारु बनाने के लिए है
आने के लिए है न वो जाने के लिए है
कुछ रात गये खास ठिकाने के लिए है
गुण्डे हैं बेहयाई है नौका बिहार में
छनती हुयी ठंढाई है नौका बिहार में
रबड़ी है मलाई है नौका बिहार में
सावन की घटा छाई है नौका बिहार में
पर्वत है और राई है नौका बिहार में
जितनी गलत कमाई है नौका बिहार में
मालिश के लिए नाई है नौका बिहार में
छप्पन छुरी भी आई है नौका बिहार में
गंगा की बात क्या करूँ गंगा उदास है।।

जो कुछ भी आज हो रहा गंगा के साथ है
क्या आप को पता नहीं कि किसका हाथ है
देखिए न आज क्या गंगा का हाल है
रहना मुहाल इसका जीना मुहाल है
गंगा के पास दर्द है आवाज़ नहीं है
मुँह खोलने का कुल में रिवाज नहीं है
गंगा नहीं रहेगी यही हाल रहा तो
कब तक यहाँ बहेगी यही हाल रहा तो
अब लीजिए संकल्प ये बीड़ा उठाइए
गंगा पर आँच आ रही गंगा बचाइए
गंगा परंपरा है ये गंगा विवेक है
गंगा ही एक सत्य है गंगा ही टेक है
गंगा से हरिद्वार है काशी प्रयाग है
गंगा ही घर की देहरी गंगा चिराग है
गंगा ही ऊर्जा है गंगा ही आग है
गंगा ही दूध पूत है गंगा सुहाग है
गंगा की बात क्या करूँ गंगा उदास है।।

– कैलाश गौतम

''पत्रकार केवल माध्यम का कार्य करें''

- **विषयः** हिन्दी पत्रकारिताः चुनौतियाँ एवं सम्भावनायें
- **दिनांकः** ३१ मई, २००६ • **स्थानः** हिन्द परिसर-उ.प्र.
- **प्रायोजकः** शब्दम्
- **उपस्थित पत्रकारः** दिनेश बैजल 'राज', सतीश मधुप, निर्विकार उपाध्याय, प्रशान्त उपाध्याय, राजेश द्विवेदी, देवेन्द्र शर्मा, सीताराम शर्मा, सरोज शर्मा एवं योगेश यादव.

जनपदीय पत्रकार सम्मेलन में पत्रकारों से निष्पक्षता, निर्भीकता और सकारात्मक दृष्टिकोण से कार्य करने का आह्वान किया गया. वक्ताओं ने इस अवसर पर कहा कि अति महत्वाकांक्षी लोग पत्रकारिता के क्षेत्र में न आयें. प्रभाव और पैसा अर्जित करने की ललक, मिशन की भावना को कमजोर बना देती है.

पत्रकार सतीश मधुप ने विषय पर विस्तृत प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि ''इस क्षेत्र में अनेक मुश्किलें हैं. वर्तमान दौर में यह कार्य ज्यादा दुरूह हो गया है, लेकिन मुश्किलों को पराजित कर आगे बढ़ना ही नियति है''.

श्री निर्विकार उपाध्याय ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि - ''पत्रकारों पर समाज का विशेष दायित्व है, तो समाज का भी पत्रकारों के प्रति दायित्व है. उन्होंने कहा कि समाज में दायित्वों के साथ-साथ कर्तव्यों का बोध भी बना रहना चाहिए.''

पत्रकारिता दिवस पर आमंत्रित पत्रकार एवं गणमान्य जन

श्री प्रशान्त उपाध्याय ने पत्रकारों के निष्पक्ष कार्य की बढ़ती आवश्यकता पर बल दिया. उन्होंने कहा कि पत्रकार में हवा के रुख के विपरीत चलने का साहस होता है.

श्री दिनेश बैजल ने सम्मेलन के विषय- ''हिन्दी पत्रकारिता : चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएं'' पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ''पूर्वाग्रह रखने वालों के समक्ष कठिन चुनौतियाँ आती हैं. उन्होंने कहा कि पत्रकार केवल माध्यम का काम करें और चटपटी खबरों के अलावा सकारात्मक कवरेज को भी स्थान दें.''

श्री सीताराम शर्मा ने पत्रकारों की समाज में भूमिका को रेखांकित करते हुए उन्हें चुनौतियों का सामना करते समय विचलित न होने की सलाह दी.

कार्यक्रम में उपस्थित नगर तथा क्षेत्र के विभिन्न पत्रकारों सर्वश्री निर्विकार उपाध्याय, दिनेश बैजल 'राज', राजेश द्विवेदी एवं देवेन्द्र शर्मा ने ''चुनौतियाँ और सम्भावनाएं'' विषय पर अपने विचार व्यक्त किये. उन्होंने कहा कि छोटे-छोटे स्थानों पर संवाद व्यवस्था के रूप में काम करने वाले ही लोग बड़े संस्थानों की नींव की ईंटकी तरह होते हैं. वे स्वयं अंधेरे में रह कर समाज को प्रकाशित करने का प्रयास करते हैं.

विविधा

''आप हँसते हैं पर मेरा ख्याल है''

- **विषयः** नववर्ष की अगवानी के लिए हास्य-व्यंग्य कवि सम्मेलन.
- **दिनांकः** ३१ दिसम्बर, २००५ • **स्थानः** हिन्द परिसर उ.प्र.
- **प्रायोजकः** हिन्द स्टाफ क्लब एवं शब्दम्
- **आमंत्रित कविगणः** लटूरी लट्ठ, पद्म अलबेला, चेतना शर्मा, मुकेश मणिकांचन, श्यामल मजूमदार, गोपीनाथ 'चर्चित', प्रशान्त उपाध्याय, जयेन्द्र पाण्डेय 'लल्ला', सुरेन्द्र सार्थक.

कार्यक्रम का शुभारम्भ कवयित्री चेतना शर्मा (आगरा) की सरस्वती वंदना से हुआ। कवि सम्मेलन में हास्य व्यंग्य के क्रम का प्रारम्भ मैनपुरी के जयेन्द्र पाण्डेय 'लल्ला' ने निम्न पंक्तियों से किया.

''मत भेजो मुझे ऐसी शुभकामनायें
जो मेरे किसी काम न आयें''

नव वर्ष के प्रसंग को अपनी कविता के माध्यम से मुकेश मणिकांचन ने और आगे बढ़ाया- ''हम विसंगतियों से हारें आप चाहे जीत जायें. अब तो मुश्किल हैं बहुत नववर्ष की शुभकामनायें'' महुआ (राज.) से पधारे व्यंग्यकार सुरेन्द्र सार्थक की हास्य व्यंग्य रचनायें आग्रह पूर्वक सुनी गईं ''बुलाना चाहता हूं प्यार पर पीड़ा चली आती''. राजस्थान के ही गंगापुर सिटी से आये डॉ. गोपीनाथ चर्चित ने सभी को हंसा-हंसा कर लोट-पोट कर दिया ''अध्यापक ने छात्र से पूछा कश्मीर भारत का स्वर्ग कैसे है बताओ, छात्र बोला - ये तो आप वहीं जाकर जान पाओगे, जब वहां जाते ही स्वर्गवासी हो जाओगे.''

लखनऊ से पधारे श्यामल मजूमदार ने भी सशक्त रचनायें सुनाकर सभी को प्रभावित किया ''एक माटी का दिया सारी रात अंधियारे से लड़ता है, तू तो खुदा का दिया है किस बात से डरता है.'' नगर के सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार प्रशान्त उपाध्याय के समसामयिक व्यंग्यों को उपस्थित श्रोताओं ने प्यार के साथ सुना ''इस जिन्दगी के महाभारत में जब से चोरी, डकैती, भ्रष्टाचार, आतंकवाद व हत्याओं ने जगह पाली है. इन मक्कारों ने अदालत में कसम खा-खाकर मेरी गीता भी बदनाम कर डाली है.''

हास्य के वरिष्ठ कवि पदम अलबेला (हाथरस) ने भी श्रोताओं की तालियाँ बटोरीं ''आप हंसते हैं लेकिन मेरा ख्याल है, आपके भी घरों का यही हाल है.'' कार्यक्रम का ठहाकों के साथ संचालन कर रहे लटूरी लट्ठ ने उपस्थित जन समुदाय को देर तक गुदगुदाया-

'' हमारे सिर तो उस दिन शर्म से झुक जाते हैं,
जब डोनेशन के नाम पर हम शिक्षा के मन्दिरों में लुट जाते हैं.''

श्रोताओं को गुदगुदाते लटूरी लट्ठ.

हास्य कवि सम्मेलन में पढ़ी गयी कविताओं के कुछ अंश

जो लोग सोचते हैं, वे जब कभी कुछ ज्यादा सोच लेते हैं।
तो अपने सिर का एक बाल नोच लेते हैं।
और यही उनकी चिन्ता का निवारण होता है।
मेरी समझ में, चिंतकों के गंजे होने का यही कारण होता है।

-जयेन्द्र पाण्डेय 'लल्ला'

'बहिन जी' शब्द सुनकर वो तैश में आ गई।
बोली - ये तुम्हें क्या हो गया है आज।
तुम्हारा दिमाग है कि बहुजन समाज।

-प्रशान्त उपाध्याय

सभ्यता की कोख में असभ्यता है पल रही,
पश्चिमी बयार में है आस्थाएं जल रही
पर हमारी संस्कृति नहीं कोई छुई-मुई
मिटेगी स्याह कालिमा, जो रूप धर के छल रही।

-श्यामल मजूमदार

बिकतीं हैं मूर्तियाँ पर भगवान नहीं बिकता।
बाजार में कहीं भी सम्मान नहीं बिकता।
बिकते हैं आदमी ही और देश बिक रहे हैं।
जीवन में एक सच्चा इन्सान नहीं बिकता।

-चेतना शर्मा

सम्बन्धों के आँगन मितवा दिल से दिल की दूरी है।
पेट की खातिर पग-पग लड़ना हम सब की मजबूरी है।
रोना धोना छोड़ साथिया मुस्कानों के गाँव चलें,
जीना है तो सच कहता हूँ हँसना बहुत जरूरी है।

चित्रमय प्रस्तुतियाँ

२४ मई ०६ को स्वर संध्या कार्यक्रम में भजन प्रस्तुत करतीं महिलाएं

वसंत–पर्व पर नृत्य करती कु. शुभी सिंह

''अब ज्यादा जरूरत है बुद्ध की''

- **विषयः** बुद्ध प्रसंग एवं विपश्यना की प्रासंगिकता
- **दिनांकः** १३ मई, २००६ • **स्थानः** हिन्द परिसर-उ.प्र.
- **प्रायोजकः** शब्दम्
- **उपस्थित विद्वतजनः** डॉ. श्याम वृक्ष मौर्य, डॉ. कप्तान सिंह, डॉ.आर.एस. करौलिया, डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, मंजर-उलवासे, बहादुर सिंह निर्दोषी, डॉ. के. डी. दीक्षित.

बुद्ध जयंती परिचर्चा में भाग लेते हुए ए.के. कॉलेज में दर्शनशास्त्र के प्रमुख डॉ. श्यामवृक्ष मौर्य ने गौतम बुद्ध को अध्यात्म का चक्रवर्ती सम्राट बताया. उन्होंने कहा कि - ''बुद्ध के लिए भगवान के दसवें अवतार की मान्यता यूँ ही नहीं बनी. उस समय का पुरोहित वर्ग जो बुद्ध की मान्यताओं का प्रबल विरोधी था, अंततोगत्वा बुद्ध का लोहा मानने को विवश हो गया था.'' डॉ. मौर्य ने बौद्ध परंपरा के जीवन दर्शन में पर्यावरणीय महत्व को भी रेखांकित किया.

चर्चा को आगे बढ़ाते हुए डॉ. कप्तान सिंह ने कहा कि ''६०० ईस्वी पूर्व में कर्मकांड की प्रचंडता के कारण वैदिक संस्कृति आम आदमी के हाथ से दूर चली गयी. ऐसे में गौतम बुद्ध और महावीर जैसी महान विभूतियों ने समाज को नयी व्यवस्था दी. बुद्ध ने लोगों को बताया कि हवन करने से प्रदूषित हवा को शुद्ध किया जा सकता है, लेकिन निरीह लोगों के कष्ट का निवारण नहीं किया जा सकता. उन्होंने कहा कि बुद्ध ने सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक विचार के द्वारा स्वयं अपने दुखों का कारण जानने का मार्ग बताया. उनका कहना था कि अपने कष्ट का कारण ज्ञात होने पर मनुष्य उसके निवारण की क्षमता अर्जित कर सकता है. यह दर्शन आज भी उतना ही प्रासंगिक है.''

गौतम बुद्ध के जीवन-दर्शन एवं उनकी ध्यान विधि पर सारगर्भित चर्चा करते आमंत्रित गण्यमान्य जन

डॉ. आर.एस. करौलिया ने वर्तमान दौर की हिंसा और अशांति के मद्देनजर बौद्ध दर्शन को ज्यादा प्रासंगिक बताया. उन्होंने कहा कि - ''विपस्सना विधि, ध्यान पाने के लिए यौगिक क्रियाओं से भी कहीं श्रेष्ठ है.''

डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने कहा कि - ''बुद्ध ने मान्यताओं को बौद्धिक धरातल पर लाकर सत्यापित करने की नसीहत दी. सत्य का अनुभव होगा तो श्रद्धा स्वयं हो जायेगी.'' डॉ. भदौरिया ने बुद्ध के जीवन-दर्शन पर आधारित एक कविता भी प्रस्तुत की.

श्री मंजर-उल-वासै ने बौद्ध मान्यता के उद्भव, विकास और प्रभाव को दार्शनिक परिप्रेक्ष्य में स्पष्ट करते हुए कहा कि - ''यज्ञ और बलि की कट्टरता के प्रतिक्रिया स्वरुप बौद्ध विचारधारा का जन्म हुआ. अपनी खूबियों के कारण यह विश्व के कई देशों में

फैला. बुद्ध ने मध्यमार्ग का अनुसरण उचित बताया. बाद में महान दार्शनिक अरस्तू ने भी इस मार्ग को महत्व दिया.''

संत कवि बहादुर सिंह निर्दोषी ने गौतम बुद्ध की करुणा, संवेदना और सहजता को अनन्त समय तक प्रासंगिक बताया. उन्होंने कहा कि - ''अगर प्यास है तो सरस धार अवश्य मिलती है, प्रार्थना से शांति, शुद्धता, समानता और शक्ति अर्जित की जा सकती है, किसी महापुरुष के संदेश को धारण करने के लिए मन के पात्र का खाली होना जरुरी है.''

अंत में डॉ. के. डी. दीक्षित ने ध्यान विधि 'विपस्सना' के व्यावहारिक ज्ञान पर प्रकाश डाला. आनापान (श्वांस की गति को देखना) क्रिया के पश्चात् मन के सहारे इन्द्रियों की गतिविधियों का अवलोकन और नियंत्रण कुछ ही दिन के प्रयास से कैसे संभव हो सकता है, उन्होंने उदाहरण सहित यह जानकारी दी.

परिचर्चा गोष्ठी का संचालन कर रहे शब्दम् के सचिव डॉ. सुबोध दुबे ने बौद्ध दर्शन के अनछुए पहलुओं का परिचय देते हुए कहा कि - ''संघम् शरणं, बुद्धम् शरणं और धम्मं शरणं का अभिप्राय यह नहीं है कि गौतम बुद्ध की तरह घर परिवार छोड़कर विरक्त हो जाओ वरन् इस का अभिप्राय तदनुरुप आचरण और विचारधारा को अपनाने का है.'' डॉ. दुबे ने आयोजन को पर्व की सार्थकता बताते हुए आंगतुकों का आभार व्यक्त किया.

हिन्द लैम्प्स के नवागंतुक कार्यकारी निर्देशक श्री ए. पी. शर्मा की उपस्थिति ने परिचर्चा गोष्ठी को और गरिमा प्रदान की. श्री शर्मा के इस अवसर पर उद्‌गार थे कि ''कल-कारखानों के जीवन के मध्य इस तरह की आध्यात्मिक चर्चाओं वाले आयोजन से काफी सुखद अनुभूति प्राप्त हुई है.''

पुस्तक समीक्षा

भगवद्‌गीता
- आधुनिक दृष्टि
लेखक - नन्दलाल पाठक

''वैदिक दर्शन और संस्कृति से असहमति के जो स्वर उठे, गीताकार ने उन्हें ध्यान से सुना, गम्भीरता से उनपर विचार किया और भगवद्‌गीता के रूप में वैदिक संस्कृति को एक सुधरा हुआ आधुनिक रूप दे दिया...''

-प्रकाशक, अमेय प्रकाशन

''इस कृति को भगवद्‌गीता का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरातल पर एक नवीन अध्ययन कहा गया है. यदि इसमें समाज शास्त्रीय अध्ययन और जोड़ दिया जाय तो अनुचित न होगा. भूमिका में यह कहना कि 'एकता का स्वर पहले भगवतगीता में उभरा था' रचनाकार की आधुनिक दृष्टि का द्योतक है. इस दृष्टि का प्रवाह इस कृति में सर्वत्र व्याप्त है...''

''तनाव संत्रास और विसंगतियों से चिंतित आज के समाज को यह कृति स्वस्थ दिशा देने की क्षमता रखती है...''

-दैनिक जागरण

''गीता को ज्ञान के सागर में भक्ति का ज्वार मानने वाले प्रो. नंदलाल पाठक ने इस सर्वकालिक महत्ववाले ग्रंथ को आज की स्थितियों-संदर्भों में देखा है. उनकी पुस्तक 'भगवद्‌गीता-आधुनिक दृष्टि' सोच की सीमाओं को नये विस्तार देती है... ''

-भारतीय विद्या भवन

प्रतिक्रियाएं - शब्दम् २००५

स्नेहमयी किरण जी,

'शब्दम्' का वार्षिक प्रतिवेदन मिला, जिससे इस अप्रतिम संस्थान की वर्षभर की गतिविधियों की झलक मिली. उद्योग में रत रहते हुए भी साहित्य और समाज के लिए आप जितना कुछ करती है, वह प्रशंसनीय और प्रेरणादायक है.

- डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र
मुख्य प्रबन्धक (राजभाषा) ओ.एन.जी.सी., देहरादून

महोदया,
आप द्वारा प्रेषित साहित्य संगीत कला को समर्पित पत्रिका 'शब्दम्' २००५-०६ मुझे प्राप्त हुई. पत्रिका के वाचन से संस्था की सांस्कृतिक गतिविधियों का पता चला. निश्चय ही प्रबुद्ध साहित्य मनीषियों का प्रयास सृजनशीलता से ओतप्रोत एवं प्रेरणा दायक है.

- डॉ. के. बी. वर्मा
प्राचार्य, लोक राष्ट्रीय महाविद्यालय, जसराना

आदरणीय किरण जी,
'शब्दम्' वार्षिकी की प्रति मिली. लेखनी, बांसुरी और तूलिका का वर्चस्व लिए 'शब्दम्' का आवरण ही अंदर के अपने पृष्ठों का परिचय बीज रूप में दे गया.

इस सबके लिए उत्पन्न भावों को कार्य और व्यवहार की भाषा में अभिव्यक्ति दे पाने की क्षमता और सामर्थ्य जिन श्रीमती किरण बजाज के पास है उसका पूरा मनोयोग से उपयोग भी कर रही हैं. इसलिए हृदय से उनके प्रति में आभार व्यक्त कर रहा हूँ.

- उमाशंकर शर्मा

मैंने 'शब्दम्' २००४-०५ को आद्योपान्त पढ़ा. पत्रिका एवं साहित्यिक संस्था के रूप में यह एक प्रशंसनीय प्रयास है. सामयिक समस्याओं के उद्घाटन और समाधान में विहितयोग इसे समाज की अमूल्य निधि कह सकते हैं. इसके सम्यक् दिग्दर्शन से भारतीय जनमानस लाभान्वित तथा भाषा, भाव और कर्मादि की दृष्टि से राष्ट्रीय गौरवार्थ समर्पित होगा, ऐसी आशा है.

- डॉ. कप्तान सिंह
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, आदर्श कृष्ण महाविद्यालय, शिकोहाबाद

आदरणीया किरण जी,
'शब्दम्' अंक प्राप्त हुआ. लेखनी-बांसुरी और तूलिका की मुखपृष्ठ पर संयोजना अपने-आप में बड़ी संकेतमयी है, साहित्य-संगीत और कला की समन्विति को मूर्तिमन्त करती हुई. पत्रिका का हर पृष्ठ बड़े ही प्रभावी ढंग से एक ऊर्जावन्त संस्था की बहु-आयामी गतिविधियों का रूप-बिम्ब और रेखाचित्र प्रस्तुत करता है. इसकी प्रगति अबाध रहे इसी मंगल कामना के साथ,

- डॉ. शिवओम अम्बर
फर्रुखाबाद

आदरणीय किरण बजाज जी,
'शब्दम्' पत्रिका के माध्यम से साहित्य, कला और संगीत के क्षेत्र में शिकोहाबाद जैसे स्थान में प्रचार-प्रसार का जो कार्य किया जा रहा है, वह स्तुत्य है. शब्दम् संस्था, शब्द ब्रह्म से लेकर भौतिक शब्द साधकों को जहाँ एक ओर मंच प्रदान किया है, वहीं दूसरी ओर इस प्रकार के जिज्ञासुकों की ज्ञान पिपासा को शांत करने का भी कार्य किया है.

-डॉ. श्यामवृक्ष मौर्य
अध्यक्ष दर्शनशास्त्र, ए. के. महाविद्यालय, शिकोहाबाद

पत्रिका अपने लघु कलेवर में भी पठनीय और संग्रहणीय है. मेरी बधाई स्वीकारें.

-डॉ. माहेश्वर तिवारी
कवि एवं साहित्यकार, मुरादाबाद

डॉ. सुबोध दुबे,
उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'शब्दम्' के वार्षिकी विशिष्ट और उत्कृष्ट कार्यक्रमों को आयोजित कर पत्रिका के रूप में प्रस्तुत किया. पत्रिका बहुत पसन्द आयी. 'शब्दम्' के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनायें स्वीकारें.

साहित्य जगत में जिस तीव्र गति 'शब्दम्' ने प्रतिष्ठा अर्जित की है यह सर्वश्री प्रो. नन्दलाल पाठक, श्रीमती किरण बजाज व डॉ. सुबोध दुबे जैसे श्रेष्ठ साहित्य प्रेमियों के आशीष का प्रतिफल है.

- राधा गोविन्द पाठक
कवि, विवेकालय, बलदेव (मथुरा)

प्रिय श्रीमती बजाज,
'शब्दम्' वार्षिकी के प्रेषण के लिए धन्यवाद. अपने उद्देश्यों को इंगित करता हुआ आवरण पृष्ठ बहुत ही सुन्दर बन पड़ा है. पत्रिका में प्रकाशित कार्यक्रमों का चित्रमय विवरण सजीव बन पड़ा है. साहित्य-संगीत-कला को समर्पित 'शब्दम्' के सुन्दर, विशिष्ट, एवं सफल संपादन के लिए हार्दिक शुभेच्छाएं.

- डॉ. चन्द्रकांत त्रिपाठी
कुलसचिव, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

आदरणीय डॉ. दुबे जी,
आपके द्वारा संपादित 'शब्दम्' स्मारिका २००४-०५ प्राप्त हुई. हार्दिक धन्यवाद. 'शब्दम्' भाग्यशाली है कि उसे स्नेहशीला श्रीमती किरण बजाज की हृदय छाया एवं राष्ट्रगौरव बजाज उद्योग का संरक्षण प्राप्त है.

- प्रो. रामवीर सिंह
अध्यक्ष, प्रयोजनमूल हिन्दी एवं भाषा प्रसार विभाग केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

आदरणीया किरण जी,
एक सप्ताह बाद जब दिल्ली से वापस आया तो

यात्रा की सारी थकान 'शब्दम्' का पहला अंक देखकर अपने आप दूर हो गई.

बहुत सुन्दर पुस्तिका है. सभी कुछ अच्छा है. अपने लगाये पौधे को लहलहाता देख प्रसन्नता स्वाभाविक है. इसलिए आप तो प्रसन्न हुई ही होंगी, बधाइयाँ.

- उदय प्रताप सिंह
संसद सदस्य (राज्य सभा)

सम्मान्या श्रीमती किरण बजाज
मैंने शब्दम् स्मारिका २००४-०५ को ध्यान से देखा-पढ़ा. 'शब्दम्' को तैयार करने में भी आपकी निष्कलुष और संकल्पित दृष्टि साफ नजर आती है. आपने इसे स्मारिका में शब्दम् की लघुयात्रा और परिचय को वृहत्तर संदर्भोसे जोड़कर एक महान संकल्प का रूप दिया है. महत्वपूर्ण अवधि नहीं, उस अवधि में किये गये कार्य और उपलब्धियाँ होती हैं. इस देश में पचासों साल पुरानी पचासों ऐसी साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक संस्थाएं है, जो जहाँ कल थीं वहीं आज भी हैं.

- सुधांशु उपाध्याय
कवि, इलाहाबाद

शब्दम् का नया अंक सचमुच नयानाभिराम है. पत्रिका की परिकल्पना वंदनीय-अविस्मरणीय. सम्पूर्ण कलेवर भें भद्रता झलकती हुई अनुभव होती है. सामग्री का चयन प्रभावोत्पादक है. कला का अद्वितीय समवाय रच दिया है शब्दम् ने. निश्चय ही इसके पीछे श्रीमती किरण बजाज की सत्प्रेरणा अविकल रूप से काम करती होगी यह मैंने उनसे मिलकर जान लिया है.

- विनोद श्रीवास्तव
कवि, कानपुर

सरोजिनी नायडू को हिन्दी में भाषण करने की प्रेरणा

२० सितम्बर, १६१८

प्रिय बहन,
आपके साथ पूर्णिया जाने की मुझे बहुत ही इच्छा होती है, क्योंकि वहां के लोग मेरी उपस्थिति चाहते हैं, परन्तु यह मेरे लिए असंभव है. फिर भी मैं आशा करता हूं कि आप ठीक ढंग से काम करेंगी और अपना भाषण हिन्दी या उर्दू - जिसे भी आप राष्ट्रभाषा कहें - में देंगी. आपके उदाहरण से वहां के युवक अपनी मातृभाषा के विकास का महत्त्व समझेंगे, क्योंकि उनके लिए हिन्दी या उर्दू केवल राष्ट्रभाषा ही नहीं, उनकी मातृभाषा भी है. चाहे एक पंक्ति ही हो, मुझे लिखिए जरूर.

आपका

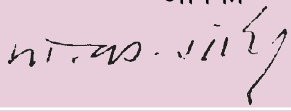

हिन्दी प्रसार

शब्दम् वाचनालयः

ग्रामीण क्षेत्रों में हिन्दी के प्रसार के लिए शब्दम् वाचनालयों की स्थापना जमनालाल बजाज फाउंडेशन के सहयोग से की गयी है। वर्तमान में ६ वाचनालय चल रहे हैं. ये हैं ग्राम ऊबटी, ब्रह्माबाद, छटनपुरा, बाकलपुर, इन्दुमई, रुपसपुर तथा नगला सुन्दर. इन वाचनालयों में दैनिक समाचार पत्रों के साथ-साथ जीवन - उपयोगी साहित्य रखने की योजना को शनैः-शनैः मूर्त रूप दिया जा रहा है. भविष्य में छात्र-छात्राओं के विकास से सम्बन्धित पत्रिकाओं तथा पुस्तकों को रखने की योजना है।

ग्राम अदमपुर में शब्दम् वाचनालय

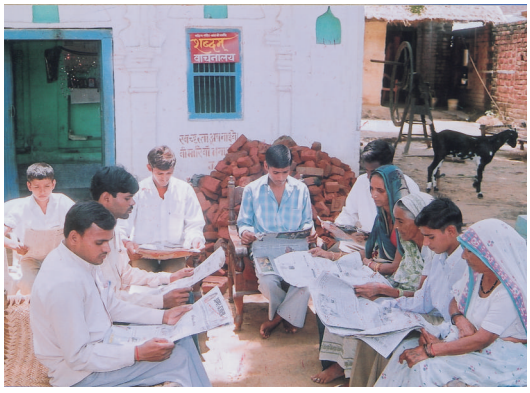

शब्दम् प्रकोष्ठ

विद्यालयों तथा महाविद्यालयों में शब्दम् प्रकोष्ठों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है. अभी तक शिकोहाबाद, फिरोजाबाद, मैनपुरी के ६ महाविद्यालयों तथा ६ विद्यालयों में शब्दम् प्रकोष्ठों की स्थापना हो चुकी है. इसके अन्तर्गत वर्ष भर हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगितायें, हिन्दी सुलेख, कविता वाचन, निबन्ध लेखन, श्रुतिलेख आदि आयोजित होती हैं.

इसी सन्दर्भ में हिन्दी दिवस के अवसर पर हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया. उनके प्रथम आने वाले विजेताओं की सूची इस प्रकार है :-

बी. डी. एम. कन्या महाविद्यालय में हिन्दी प्रश्न-उत्तर प्रतियोगिता

हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगितायें
(दिनांक ७ सितम्बर से १४ सितम्बर, २००६ तक)

दाऊदयाल महाविद्यालय, फिरोजाबाद
हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता:
कु. शिवानी शर्मा

कुंवर आर. सी. महाविद्यालय, मैनपुरी
निबन्ध प्रतियोगिता:
कु. दीप्ति दुबे

सस्वर काव्य प्रतियोगिता:
कु. रुचि तिवारी

सुलेख प्रतियोगिता:
कु. प्रतिभा यादव

नारायण महाविद्यालय
निबन्ध प्रतियोगिता:
संदीप कुमार

कविता प्रतियोगिता:
कु. मधुरिमा सिंह

हिन्दी प्रश्न-उत्तर प्रतियोगिता:
१६ विजेताओं को पुरस्कृत किया गया.

बी. डी. एम. कन्या महाविद्यालय
हिन्दी प्रश्न-उत्तर प्रतियोगिता:
२५ विजेताओं को पुरस्कृत किया गया.

सरस्वती इन्टर कॉलेज
हिन्दी प्रश्न-उत्तर प्रतियोगिता:
प्रदीप कुमार, नीलेश यादव, राहुल यादव

भगवती देवी पालीवाल कन्या इन्टर कॉलेज

हिन्दी प्रश्न-उत्तर प्रतियोगिता:
३५ विजेताओं को पुरस्कृत किया गया.

गोमती देवी इन्टर कॉलेज
वाद-विवाद प्रतियोगिता:
निष्ठा पांडे

भारतीय इन्टर कॉलेज एवं गोमती देवी इन्टर कॉलेज धातरी
हिन्दी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता:
२४ विजेताओं को पुरस्कृत किया गया.

लिटिल लैम्प्स स्कूल
सुलेख प्रतियोगिता:
यशफीन जब्बार

निबन्ध प्रतियोगिता:
नित्या सिंह

शिक्षा प्रकाशालय
हिन्दी गद्यवाचन प्रतियोगिता:
अवनीन्द्र यादव

हिन्दी पद्य वाचन प्रतियोगिता:
कु. नेहा

निबन्ध प्रतियोगिता:
शरद यादव

श्रुतिलेख प्रतियोगिता:
अभिषेक कुमार

झाऊलाल शिक्षण संस्थान
हिन्दी सुलेख प्रतियोगिता:
प्रीति कुमारी

नारायण महाविद्यालय में निबन्ध प्रतियोगिता

द्वितीय स्थापना दिवस समारोह

'तुम्हारे लिए मैं किसी भी हद तक जा सकती थी'

- **विषय:** 'एक अनजान औरत का ख़त' (कहानी का रंगमंचीय पाठ)
- **दिनांक:** १६ नवम्बर, २००६ • **स्थान:** स्टाफ क्लब
- **प्रायोजक:** शब्दम्
- **प्रस्तुति:** सुश्री असीमा भट्ट

द्वितीय वर्षगांठ की पूर्व संध्या पर हिन्द परिसर में कहानी की रंगमंचीय प्रस्तुति के अन्तर्गत विश्व प्रसिद्ध जर्मन लेखक 'स्टीफन ज़्विग' की कहानी का हिन्दी रूपान्तर 'एक अनजान औरत का ख़त' प्रसिद्ध नाट्यकर्मी सुश्री असीमा भट्ट ने प्रस्तुत किया.

सुश्री भट्ट ने कहानी को रेखांकित करते हुए अपने एकल अभिनय से कहानी को मंच पर जीवंत किया. कहानी में एक १३ वर्ष की बालिका एक बुज़ुर्ग लेखक के प्रेम में बंध जाती है. बालिका अपने प्रेमी लेखक के लिए एक-एक पल सदियों की तरह गुजारती है. १३ वर्षीय बालिका के हाव-भाव असीमा भट्ट ने प्रभावपूर्ण ढंग से प्रकट किये. एक किशोरी की भावनाएं जब प्रेमी द्वारा आहत होती हैं तब उसकी छटपटाहट और इसके बावजूद प्रेमी के लिए सर्वस्व अर्पण कर देने की भावपूर्ण प्रस्तुति ने दर्शकों को मंत्र मुग्ध कर दिया. प्रेमी की निशानी को अपने पेट में पालने के बाद अपने बच्चे में अपने प्रेमी की सूरत का अक्स देखने वाली नायिका अज्ञात यौवना है. नाटक की कहानी के अनुरूप असीमा के स्वर और भाव-भंगिमाएं दृष्टिगोचर होती रहीं. लाचार प्रेमिका के बच्चे ने जब बुखार से दम तोड़ दिया तब नायिका ने अपने प्रेमी को पत्र लिखा. ''बच्चे

अपने प्रेमी का स्मरण करती हुई 'अनजान औरत' के मार्मिक अभिनय में असीमा भट्ट

की खातिर खुद को बेच दिया; तुम्हें तुम्हारे जन्मदिन पर सफेद गुलाब भेजे, लेकिन तुमने कभी ये नहीं पूछा कौन भेजता है ये गुलाब? ११ साल तक चुप रहने के बाद आज तुम्हारी बेवफाई पर एक अनजान औरत ख़त लिख रही है.ह्न' लेकिन प्रेमी की बेवफाई से नायिका की भावनाएं इस तरह तार-तार हो जाती हैं कि वह पत्र लिखने के बाद उसे जलाकर खाक करते हुए कहती है-''तुम्हारी तरह तुम्हारा बेटा भी मुझे छोड़कर गया. आखिर था तो तुम्हारा बेटा ही न.''
नाटक के दौरान दर्शक सांस रोके, असीमा भट्ट की कला के आत्मीय साक्षी बने रहे.

स्टीफन ज़्विग की नायिका के रुप में असीमा भट्ट की भावपूर्ण प्रस्तुति

स्तब्ध हो देख रहे दर्शक रवीन्द्र कालिया, ममता कालिया, किरण बजाज, गीतिका बजाज, सोम ठाकुर, रामऔतार रमन एवं अन्य

द्वितीय स्थापना दिवस समारोह

''कहानी अमर है, सदा सुहागिन है''

- **विषय:** परिचर्चा - 'हिन्दी कहानी : २१वीं सदी'
- **दिनांक:** १७ नवम्बर, २००६ • **स्थान:** शब्दम् वाचनालय, हिन्द परिसर
- **प्रायोजक:** शब्दम्
- **उपस्थित कथाकार:** रवीन्द्र कालिया, जितेन्द्र भाटिया, अखिलेश, हरिमोहन एवं ममता कालिया.

द्वितीय स्थापना दिवस पर 'हिन्दी कहानी - २१वीं सदी' विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया. इस परिचर्चा में हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखक रवीन्द्र कालिया, जितेन्द्र कालिया, अखिलेश, हरिमोहन, ममता कालिया ने हिस्सा लिया. कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन डॉ. सुबोध दुबे ने किया.

उद्घाटन के अवसर पर ममता कालिया एवं किरण बजाज

अध्यक्ष किरण बजाज ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि इन महत्त्वपूर्ण लेखकों की उपस्थिति 'शब्दम्' के आयोजन की उपलब्धि है. किरण बजाज ने कहानी पर आधारित इस आयोजन पर कहा कि साहित्य की अन्य विधाओं पर तो प्रश्न चिन्ह उठते रहे हैं लेकिन कहानी की कहानी बहुत पुरानी है. मानवमन जितनी पुरानी. और अपनी सामाजिक उपयोगिता के कारण यह 'अमर है सदा सुहागिन है'. उन्होंने लेखकों का आहवान किया कि वे अन्य भारतीय भाषाओं के साथ हिन्दी कहानी की संगीत का प्रयास करें. उन्होंने हिन्दी के महत्व पर बोलते हुए कहा कि 'हिन्दी एक चौराहा है जहाँ सभी भारतीय भाषायें मिलती हैं.'

इस परिचर्चा की अध्यक्षता हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार रवीन्द्र कालिया ने की. परिचर्चा के लिए आधार वक्तव्य हिन्दी के वरिष्ठ लेखक जितेन्द्र भाटिया ने दिया. संदर्भ में उन्होंने प्रसिद्ध ग़ज़ल की पंक्ति 'अपनी आग को जिन्दा रखना कितना मुश्किल है' भी उद्धृत की.

परिचर्चा के प्रारम्भ में भाटिया ने हिन्दी भाषा की समस्याओं को लेकर अपनी चिन्ता जाहिर की. उन्होंने कहा कि हिन्दी को अखिल भारतीय स्तर पर सम्पर्क भाषा बनाये जाने की जरूरत है. साथ ही

वैश्वीकरण के इस दौर में अपनी भाषा की सांस्कृतिक पहचान बनाये रखना जरूरी है क्योंकि हम इसे खोकर भारतीय नहीं रह जायेंगे. उन्होंने अंग्रेजी भाषा की वकालत के खिलाफ तर्क देते हुए कहा कि वैश्वीकरण के इस दौर में अपनी भाषा के सहारे भी लड़ा जा सकता है, चीन जापान और कोरिया आदि देश इसके उदाहरण हैं.

कहानी के संकट पर विचार करते हुए भाटिया ने कहा कि विधा के सामने एक प्रमुख संकट है उन्होंने 'किस्सा गोई का जादू' कहानी की जरूरत बताया. इस संदर्भ में उन्होंने प्रेमचन्द की कहानियों का उदाहरण दिया. उन्होंने वर्तमान समय का हवाला देते हुए कहा कि 'सत्यमेव जयते' और 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है' जैसी सारी सूक्तियाँ गलत साबित हो चुकी हैं. इसलिए महज यथार्थ पर निर्भर रहकर कहानी नहीं कही जा सकती. इसराइली लेखक का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान संदर्भ में जीवन की दुविधा के उद्घाटन के लिए कहानी माध्यम है. उन्होंने अपने वक्तव्य के समापन पर संस्था 'शब्दम्' के शिकोहाबाद जैसे कस्बे में चल रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि आप कहाँ हैं यह महत्वपूर्ण नहीं है, पर आप जहाँ पर हैं वहाँ क्या कर रहे हैं, यह महत्वपूर्ण है.

परिचर्चा को आगे बढ़ाते हुए चर्चित लेखक एवं प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका 'तद्भव' के सम्पादक अखिलेश ने कहा कि २१वीं सदी अपने आप में एक उलझन भरा पद है. इसी समय में हम १४वीं शताब्दी जैसी जीवन स्थितियों के उदाहरण भी पाते हैं. इसी २१वीं सदी के आसपास राजनीति में जातिवाद प्रमुख एजेण्डा बनता है, मजहब के नाम पर बर्बर हिंसा होती है. ये घटनायें इस उत्तर आधुनिक समय पर प्रश्न चिन्ह लगाती हैं. अखिलेश ने हिन्दी कहानी के स्वरूप पर

परिचर्चा में उपस्थित बायें से सोम ठाकुर, जितेन्द्र भाटिया, ममता कालिया, रवीन्द्र कालिया, अखिलेश तथा हरिमोहन

चर्चा करते हुए कहा कि अब यथार्थ को देखने की दृष्टि बदल चुकी है.

हिन्दी की प्रसिद्ध कहानियों 'पन्नाधाय' और 'गुल की बन्नो' का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि आज इसका पुनर्पाठ हो रहा है. भूमण्डलीकरण को विकास का कारण मानना बहुत बड़ा फरेब है. उन्होंने कहा कि हम जो पा रहे हैं उसे किस कीमत पर पा रहे हैं इसका मूल्यांकन होना चाहिए. अखिलेश ने कहा कि हमारे भीतर हृदय बंजर होता जा रहा है, संवेदना के नष्ट हो जाने पर उसे वापस पाना कठिन काम है. कहानी पाने और खोने की इसी तकलीफ के बीच लिखी जा रही है.

कथाकार हरिमोहन ने कहा कि - कहानी का उदय सभ्यता के उदय के साथ हुआ. उन्होंने पंचतंत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि कहानी की विशेषता यह है कि इसमें सामाजिकता सर्वोपरि है. हरिमोहन ने समकालीन हिन्दी कहानी की स्थिति को उत्साहजनक कहा.

वरिष्ठ कथाकार ममता कालिया ने 'शब्दम्' के प्रति आभार व्यक्त करते हुए परिचर्चा को आगे बढ़ाया. उन्होंने समय के सन्दर्भ में कहा कि ''समय कितना भी बदले वह साहित्यकार को कुछ भी कहने की छूट नहीं देता.'' उन्होंने कहा कि समय एक प्रवाह है. समय के किसी कालखण्ड को हम ब्रेड स्लाइस की तरह काटकर अलग नहीं कर सकते. साहित्य में चर्चित 'जादूई यथार्थवाद' पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि भारतीय संदर्भ में यह नई चीज नहीं है, उन्होंने देवकीनन्दन खत्री के उपन्यास 'चन्द्रकांता' के उदाहरण के साथ हिन्दी की लोक कथाओं में जानवरों के चरित्र के रूप में प्रस्तुतिकरण का भी उल्लेख किया. ममता कालिया ने रचनाकार के सामने यथार्थ की चुनौती का जिक्र करते हुए कहा कि वर्तमान यथार्थ की तस्वीर भयावह है. रचनाकार उसे हल्का कर रचना करता है. उन्होंने इस सन्दर्भ में नोबेल पुरस्कार विजेता मिस्र के लेखक की कहानी 'बस अड्डे पर' का जिक्र किया. उन्होंने कहा कि रचनाकार की यह जिम्मेदारी है कि वह यथार्थ का प्रस्तुतीकरण इस तरह करें कि जीने में आपकी आस्था खत्म भी न हो. अन्त में उन्होंने कहा कि जिस तरह २१वीं सदी में चुप रह कर प्रेम करना मुश्किल है उसी तरह कहानी लिखना भी मुश्किल है. कार्यक्रम के बारे उन्होंने कहा कि ''मैं इस यात्रा की सुखद याद बहुत दिन तक अपने साथ रखूंगी.''

परिचर्चा की अध्यक्षता कर रहे हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार रवीन्द्र कालिया ने अपनी बात वर्तमान हिन्दी कहानी की सीमाओं को बताते हुए की. उन्होंने कहा कि यह दुखद है वर्तमान की ज्वलंत समस्याओं जैसे 'भ्रूण हत्या' और देश के विभिन्न भागों में हो रही 'किसानों की आत्महत्यायें' आज कहानी का विषय नहीं है. उन्होंने पाठकों की कमी का रोना रोने को गलत ठहराते हुए प्रेमचन्द की पुस्तकों की बिक्री का उदाहरण दिया. उन्होंने वर्तमान कथा लेखन पर व्यंग्य करते हुए कहा कि ''आज के लेखक को शिल्प की चिन्ता ज्यादा है सोसाइटी की कम.'' लेकिन साथ ही उन्होंने नई पीढ़ी से आशा जताते हुए कहा कि नई पीढ़ी हमसे ज्यादा तैयारी के साथ लेखन में आई है. हिन्दी भाषा की वर्तमान स्थिति पर चिन्ता जाहिर करते हुए उन्होंने कहा कि हिन्दी को बचाने के लिए उसे रोजगार और नई तकनीक से जोड़ना जरूरी है. उन्होंने नई पीढ़ी पर लगाये जा रहे आरोपों को खारिज करते हुए कहा कि युवा मानसिकता को समझने की जरुरत है. उन्होंने कहा कि जरूरी यह है कि समाज को कौन किधर ले जा

रहा है, इसकी शिनाख्त की जाये. २१ वीं सदी में कहानी की दिशा में उन्होंने कहा कि समाज की विसंगतियों को समझे बिना अच्छी कहानी लिखना सम्भव नहीं.

शिकोहाबाद जैसे नगर के साहित्यप्रेमियों और बुद्धिजीवियों के लिए 'शब्दम्' का यह कथा केन्द्रित आयोजन सुखद अनुभव था. परिचर्चा के बाद श्रोताओं की महत्वपूर्ण जिज्ञासायें सामने आईं। मंजर-उलवासै ने अपनी प्रतिक्रिया में कथाकारों को साहित्य की बड़ी दुनिया से परिचय के लिए धन्यवाद दिया. डॉ. किरण भाटिया ने हिन्दी भाषा में शब्द कोष के अभाव की ओर लेखकों का ध्यान दिलाया. इस पर जितेन्द्र भाटिया ने १५० वर्ष पूर्व उपलब्ध समृद्ध शब्दकोषों भी रचना का हवाला देते हुए वर्तमान स्थिति को लेकर कुछ जरूरी सवाल उठाये. उन्होंने कहा कि हिन्दी समाज को गौरव के साथ हिन्दी के विकास के लिए काम करना चाहिए. उन्होंने हिन्दी प्रेमी लोगों से प्रतिबद्धता का आहवान किया.

परिचर्चा का समापन 'शब्दम्' के उपाध्यक्ष सोम ठाकुर ने किया. उन्होंने कहा कि वर्तमान निराशाजनक परिदृश्य से घबराने की आवश्यकता नहीं है. सोम ठाकुर ने कहा कि हिन्दी को उपयोगी बनाने के लिए वाणिज्य और विज्ञान की आवश्यकता को पूरा करना होगा. उन्होंने युवा शक्ति पर आस्था व्यक्त करते हुए कहा कि ये युवा आज की चेतना को ऊर्जा से भर देंगे. अंत में उन्होंने अपनी प्रसिद्ध रचना 'हिन्दी का समारोह गीत', 'अभिनन्दन अपनी संस्कृति का, आराधन अपनी भाषा का' का पाठ कर कार्यक्रम का समापन किया.

परिचर्चा समापन पर अतिथि कथाकार, शब्दम् नियामक मण्डल के सदस्य तथा अन्य विशिष्टजन

द्वितीय स्थापना दिवस समारोह

'रंग त्रिवेणी'

- **विषयः** भाव अभिनय, कथा-कथन तथा 'राई' नाट्य मंचन
- **दिनांकः** १७ नवम्बर, २००६ • **स्थानः** हिन्द परिसर, शिकोहाबाद
- **प्रायोजकः** शब्दम्
- **प्रस्तुतिः** सौम्या रघुवंशी, चित्रांशी मिश्रा, डिम्पी मिश्रा, अर्जुन सिंह, धीरज मिश्रा, संजय सिंह, संदीप, आशुतोष गौतम, सूरज सिंह, विजय शर्मा, आनन्द बंसल, निर्मल सिंह, सुनील शाक्य.

द्वितीय स्थापना दिवस समारोह का समापन कार्यक्रम आगरा 'इप्टा' के कलाकारों द्वारा 'रंग त्रिवेणी' शीर्षक से संपन्न हुआ.

प्रथम प्रस्तुति 'बिटिया' में किरण बजाज और शशि तिवारी की कविताओं पर आधारित रचनाओं पर सुश्री चित्रांशी मिश्रा तथा सौम्या रघुवंशी द्वारा भाव अभिनय प्रस्तुत किया गया.

पहली रचना में 'बिटिया' की सहज-सरल-संवेदनाशील छवियों को उभारा गया है। वहीं दूसरी रचना में भ्रूण हत्या के कारण अजन्मी 'बिटिया' की मार्मिक वेदना को प्रस्तुत किया गया है। इन भाव अभिनयों को देखकर दर्शकों के नेत्र सजल हो गये।

द्वितीय प्रस्तुति स्वर्गीय श्री राजेन्द्र रघुवंशी की परिकल्पना तथा अमृतलाल नागर के उपन्यास पर आधारित 'सेठ बांकेलाल' का डिम्पी मिश्रा द्वारा कथा-कथन शैली में प्रस्तुतिकरण था जिसे दर्शकों ने बहुत सराहा. एक ही कलाकार द्वारा विभिन्न व्यक्तियों का अभिनय, वो भी आगरा की टकसाली जुबान में, सारे सभागार को मोहित कर गया.

'रंग त्रिवेणी' की अन्तिम प्रस्तुति थी 'तेलगु कहानी' पर आधारित 'राई' नाटक का मंचन. एक ऐसे गाँव की कहानी, जिसमें कोई अपराध नहीं होते हैं. पुलिस इंस्पेक्टर शॉटपुट फेंकने के अभ्यास में लगा रहता है और स्वप्न देखता है कि कैसे उसका नाम गिनीज़ बुक में आ जाये. गाँव के मुखिया तथा उसके बन्धुआ मज़दूर के बीच द्वन्द में घूमती कहानी कई मनोरंजक एवं संवेदनशील उतार-चढ़ाव से गुज़रती है और अन्त में शोषित की व्यथा को प्रगट करती है जो कि चरम परिणति के रूप में पत्थर को राई समान उठा लेते हैं.

समस्त पात्रों के सजीव एवं सशक्त अभिनय से युक्त इस नाटक का निदेशन दिलीप रघुवंशी ने किया. 'रंग त्रिवेणी' का संयोजन जितेन्द्र रघुवंशी, सचिव 'इप्टा' आगरा ने किया.

द्वितीय स्थापना दिवस समारोह का समापन अध्यक्ष किरण बजाज के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ. समस्त कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में सुधीजनों ने भाग लिया और सराहा.

सेठ बांकेलाल का जीवंत अभिनय करते डिम्पी मिश्रा

नाटक 'राई' का चरम दृश्य

नाट्य मंचन की समाप्ति पर आभार प्रकट करतीं किरण बजाज. साथ में (बायें से) निदेशक दिलीप रघुवंशी, संयोजक जितेन्द्र रघुवंशी तथा नाटक के कलाकार

अजन्मी
(कन्या भ्रूण-हत्या)

बाबुल, मैं तोरे अँगना चहकती रे
मैया, जनम तैनें मोहे, दियौ तौ होतौ रे.
धरती पे आती, मैं मुस्काती
दादी की गोद में मैं तो मचलती रे,
जनौ तो होतौ रे, मोहे जनौ तौ होतौ रे.
मैं तुतलाती, मन बहलाती
बन कै लता तोरे द्वारे महकती रे
सींचौ तौ होतौ रे, मोहे सीचौं तौ होतौ रे
जनम मोहे दियौ तौ होतौ रे.
फ्राक पहनती, चुटिया करती
दादाजी जो चलते तौ लठिया बनती रे
थामौं तौ होतौ रे, मोहे थामौ तो होतौ रे
जनम मोहे दियौ तौ होतौ रे.
अँगना बुहारती, गुड़िया कूँ ब्याहती
नीम के औरें-धौरें मीठी कुहुकती रे
सुन्यौ तौ होतौ रे, मोहै सुन्यौ तौ होतौ रे
जनम मोहे दियौ तौ होतौ रे.
गैया दुहाती, लौनी खाती
तुलसौ कौ बिरवा मैं बन जाती रे
रोपौ तौ होतौ रे, मोहे रौपौ तौ होतौ रे
जनम मोहे दियौ तौ होतौ रे.
ओढ़ उढ़नियाँ, बन कै दुल्हनियाँ
दोऊ कुल निभाती लाज मैं रखती रे
ब्याहौ तौ होतौ रे, मोहे ब्याहौ तौ होतौ रे
जनम मोहे दियौ तौ होतौ रे.

- डॉ. शशि तिवारी

सौम्य रघुवंशी द्वारा
अजन्मी बिटिया की प्रस्तुति

- हिन्दी को देश–विदेश में राष्ट्रभाषा का पूर्ण सम्मान दें।
- हम परस्पर हिन्दी बोलें, सीखें,और पढ़ें।
- अपने गाँव, कॉलौनी एवं शहर में हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे – निबन्ध, कहानी, नाटक, कविता, वाद–विवाद आदि को प्रोत्साहन एवं योगदान दें।
- अपने कारोबार में हिन्दी भाषा को सम्मान और स्थान दें।
- साहित्यिक आयोजनों में भाग लें एवं सहयोग दें।
- हिन्दी शिक्षकों, लेखकों, कवियों, रचनाकारों, कलाकारों को प्रोत्साहित करें।
- हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी, वाचनालय, मुद्रण, विक्रय को बढ़ावा दें।
- विश्व के उत्कृष्ट साहित्य का अनुवाद हिन्दी में एवं हिन्दी साहित्य का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं में कराने में सहयोग करें।

आपके सहयोग, सुझाव एवं योगदान के लिए हम सदैव कृतज्ञ रहेंगे।

“जबतक भारत में कोई एक आम भाषा नहीं अपनाई जाती, तबतक किसी भी दिशा में प्रगति होना असंभव है.”

–जमनालाल बजाज

सौजन्य: बजाज इलैक्ट्रिकल्स लि.